समेटी वार्षिक प्रत्यावेदन
वर्ष 2024–25

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी-उत्तराखण्ड)

प्रसार शिक्षा निदेशालय

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

पंतनगर–263145, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड

(समेटी–उत्तराखण्ड)

समेटी वार्षिक प्रतिवेदन : वर्ष 2024–25

संरक्षक

डा0 मनमोहन सिंह चौहान

कुलपति

गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

निर्देशन

डा0 जितेन्द्र क्वात्रा

निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

सम्पादन

डा0 बी0डी0 सिंह

प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय

गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

डा0 जितेन्द्र क्वात्रा

निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

एवं

कु0 ज्योति कनवाल

यंग प्रोफेशनल–द्वितीय, समेटी–उत्तराखण्ड

सितम्बर, 2025

उद्धरण : बी0डी0 सिंह एवं जितेन्द्र क्वात्रा, वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2024–25), राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड, (समेटी–उत्तराखण्ड), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड, कुल पृष्ठ–72

ISBN : 978-93-91664-21-3

संकलन एवं आलेख : बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर) एवं कु0 ज्योति कनवाल, यंग प्रोफेशनल–द्वितीय (समेटी), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

प्रकाशक : प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

सम्पर्क सं. : 05944–233336, ई–मेल **: sametiuttarakhand@gmail.com**

डॉ. एम.एस. चौहान
एफ.एन.ए., एफ.एन.ए.एससी., एफ.एन.ए.ए.एस., एफ.एन.ए.डी.एस.
कुलपति
Dr. M. S. Chauhan
FNA, FNASc, FNAAS, FNADS
Vice-Chancellor

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
पंतनगर–263145, जिला–ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड) भारत
G.B. Pant University of Agriculture & Technology,
Pantnagar-263145, Dist.-U.S. Nagar (Uttarakhand) India

प्राक्कथन

निरन्तर बढ़ती जनसंख्या हेतु हमारे पास पर्याप्त खाद्यान्न की उपलब्धता है, इस हेतु निश्चित रूप से कृषि वैज्ञानिक, विभागीय अधिकारी, प्रसार कार्यकर्ता एवं कृषक बधाई के पात्र हैं। विकसित तकनीक के क्षैतिज हस्तांतरण के लिए विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थान सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा विभिन्न रेखीय विभागों का इसमें बहुत बड़ा योगदान होता है। कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विश्वविद्यालय अथवा अन्य शोध केन्द्रों द्वारा विकसित तकनीकों को क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप कृषकों के प्रक्षेत्र पर इनका प्रचार–प्रसार करते हुए कृषकों की आजीविका सुधारने हेतु सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। वर्तमान में कृषक स्वयं सहायता समूह, कृषक क्लब, कृषक मण्डल, कृषक उत्पादन संगठन (एफ.पी.ओ.) आदि द्वारा संगठित होकर कृषिकरण करते हुए अपने आजीविका में सुधार कर रहे हैं। अनुकूल कृषि खाद्य प्रणाली और सभी के पोषण हेतु भारत सरकार द्वारा ''विकसित कृषि संकल्प अभियान'' चलाया गया और इस कार्यक्रम को मा. केन्द्रीय कृषि मंत्री ने ''एक राष्ट्र–एक कृषि–एक टीम'' के नाम से सम्बोधित किया।

तकनीक हस्तान्तरण में समेटी–उत्तराखण्ड जो प्रसार शिक्षा निदेशालय के माध्यम से संचालित होती है, का बहुत बड़ा योगदान होता है। इस संस्थान द्वारा रेखीय विभागों के अधिकारियों, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा प्रगतिशील कृषकों के लिए स्वरोजगारपरक अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों यथा पौधशाला प्रबन्धन, बाजार आधारित प्रसार, फल और सब्जियों का विपणन एवं प्रसंस्करण, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती, कुक्कुट पालन, प्राकृतिक खेती व दुग्ध उत्पादन आदि आयोजित किये जाते हैं। संस्थान द्वारा समय–समय पर वित्त पोषित प्रशिक्षण आयोजित करते हुए राज्य के बाहर के प्रसार कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों का भी क्षमता विकास किया जाता है। हर्ष का विषय है कि राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (समेटी–उत्तराखण्ड), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर समेटी का वार्षिक प्रतिवेदन : वर्ष 2024–25 सफल प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह रिपोर्ट कृषि, उद्यान, पशुपालन, मत्स्य एवं रेशम उत्पादन सम्बन्धी अधिकारी, प्रसार कर्मी व कृषकों हेतु लाभकारी होगी। इस प्रयास के लिए मैं रिपोर्ट के प्रकाशकों डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक को हार्दिक बधाई देता हूँ।

(मनमोहन सिंह चौहान)

दूरभाष (कार्यालय) : 05944–233333, 7500122224, 9991652455 (मो0), फैक्स : 05944–233500 (कार्यालय)
E-mail : vcgbpuat@gmail.com, Website : www.gbpuat.ac.in

डा0 जितेन्द्र क्वात्रा
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं निदेशक,
राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान,
उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड)

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
पंतनगर–263145, जिला–ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड) भारत
G.B. Pant University of Agriculture & Technology,
Pantnagar-263145, Dist.-U.S. Nagar (Uttarakhand) India
दूरभाष (कार्यालय): 05944–233336
E-mail: dirextedugbp@gmail.com

आमुख

सघन कृषि का हरित क्रान्ति माडल 1960 के दशक में आरम्भ हुआ। इसके अन्तर्गत सिंचाई, उर्वरक एवं पादप सुरक्षा रसायनों के सुनिश्चित आपूर्ति से धान व गेहूँ की अधिक उपज देने वाली किस्मों का प्रादुर्भाव हुआ। इस क्रान्ति में 1960 के दशक के शुरू में खाद्यान्न संकट के समाधान में सहायता की और देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। यद्यपि 1980 के दशक में हरित क्रान्ति जो मुख्य रूप से कृषि आदानों यथा् उन्नत बीज, उर्वरक, सिंचाई जल एवं कीटनाषक के अधिक उपयोग पर आधारित थी, उपज में गिरावट दिखने लगी। उर्वरकों के अनियोजित प्रयोग और प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन से मृदा स्वास्थ्य में गिरावट, वर्ष दर वर्ष जल स्तर गिरना, लवणता, नहर–सिंचित क्षेत्रों में जल जमाव, बहुशेषक तत्वों की बढ़ती कमी, फसल की कम अथवा स्थिर पैदावार व पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याओं का जन्म हुआ। निरन्तर बढ़ते मशीनरी उपयोग ने पशु षक्ति की भूमिका को वर्ष दर वर्ष कम कर दिया। फसल अवशेष के जलने से देश के उत्तर पश्चिमी हिस्से वायु प्रदुशण से बुरी तरह प्रभावित हुए। इसके अतिरिक्त शेषक तत्वों का ह्रास, मृदा स्वास्थ्य में गिरावट एवं मित्र कीट की संख्या में भारी कमी देखी गई। इन स्थितियों से उबरने हेतु समन्वित शेषक तत्व प्रबन्धन, एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन, जैविक कृषि, प्राकृतिक खेती, शून्य लागत आधारित खेती जैसी तकनीक का विकास हुआ। जनसमुदाय में जहरीले रसायन मुक्त खाद्यान्न, सब्जी, जैविक उत्पाद इत्यादि की महत्ता बढ़ रही है। बड़े–बड़े शहरों में प्रतिवर्ष जैविक उत्पाद क्रय करने वालों की संख्या बढ़ रही है। इसका लाभ कहीं न कहीं कृषकों को मिल रहा है और उनके आय में बढ़ोत्तरी हो रही है। उत्तराखण्ड में अनेक कृषक अपने अभिनव प्रयोगों जैसे मशरूम उत्पादन, मौन पालन, मत्स्य पालन, जैविक खेती आदि से राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। इन प्रगतिशील कृषकों से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक प्रवासी व अन्य कृषक भी आधुनिक कृषि अपना रहे हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न शोध संस्थानों से विकसित तकनीक को कृषकों तक पहुँचाया जाय। समेटी–उत्तराखण्ड इस दिशा में अनेक स्वरोजगारपरक एवं आय वृद्धि आधारित प्रशिक्षण का आयोजन करती है। संस्थान इन प्रशिक्षणों द्वारा सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के कृषकों के आजीविका सुधार एवं स्वरोजगार हेतु प्रेरित कर रही है। संस्थान द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन : वर्ष 2024–25 का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि यह रिपोर्ट विभागीय अधिकारी, प्रसार कर्मी व कृषकों हेतु उपयोगी सि़द्ध होगी। मैं इस रिपोर्ट के लेखक डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समन्वयक समेटी को उनके इस विशिष्ट प्रयास हेतु साधुवाद देता हूँ।

(जितेन्द्र क्वात्रा)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	समेटी उत्तराखण्ड – परिचय	6
2.	समेटी उत्तराखण्ड : प्रगति सारांश (वर्ष 2024–25)	7
3.	प्रशिक्षणों की कार्ययोजना : वर्ष 2024–25	12
4.	आयोजित प्रशिक्षण में जनपदवार प्रतिभागियों की उपस्थिति	14
5.	आयोजित प्रशिक्षणों का संक्षिप्त विवरण	17
अ. कार्ययोजनानुसार प्रशिक्षण		**17**
5.1	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	17
5.2	जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	18
5.3	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	20
5.4	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	22
5.5	मूल्यवर्धन से आय अर्जन	24
5.6	उन्नत बकरी पालन	26
5.7	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	28
5.8	बाजार आधारित प्रसार	30
5.9	ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग	31
5.10	मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम	33
5.11	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	35
5.12	उन्नत बकरी पालन	37
5.13	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	38
5.14	डिजिटल कृषि	40
ब. वित्त पोषित प्रशिक्षण		**43**
5.15	बकरी पालन–एक लाभकारी व्यवसाय	43
5.16	जैविक खेती	44
5.17	विकसित उन्नत कृषि तकनीक	47
5.18	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	48
5.19	प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण के लिए विस्तार अधिकारियों का क्षमता विकास	50
6.	विभिन्न प्रशिक्षणों के दौरान कृषकों की प्रतिक्रिया / फीडबेक	52
स. सफलता की कहानियाँ		**54**
7.	कृषकों के आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाती समेटी–उत्तराखण्ड	54
7.1	खुशियों की राह दिखाती मशरूम एवं सब्जी उत्पादन	56
7.2	मौन पालन एवं मशरूम उत्पादन– सुखद भविष्य की राह	58
7.3	मशरूम उत्पादन से धन उत्पादन	60
7.4	प्राकृतिक खेती से सशक्तिकरण	62
7.5	वर्मी कम्पोस्टिंग से उद्यमिता की ओर बढ़ते कदम	64
द. विविध		**64**
8.	डिप्लोमा कोर्स–डेसी (डिप्लोमा इन एग्रीकल्चरल एक्सटेंसन सर्विसेज फॉर इनपुट डीलर्स)	64
9.	प्रकाशित लेख	66
9.1	खेती पत्रिका–कृषि निवेश वितरकों हेतु डिप्लोमा कोर्स 'डेसी'	66
9.2	ई–बुक प्रकाशन	66
9.3	किसानों के लिए उपयोगी कृषि एडवायजरी	67
10.	कार्ययोजना : वर्ष 2025–26	68

1. राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (समेटी–उत्तराखण्ड)

प्रसार शिक्षा निदेशालय
गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर

1	संस्था का नाम व पता	:	राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, (समेटी–उत्तराखण्ड), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर–263145, जिला ऊधम सिंह नगर
2	परिचय	:	समेटी–उत्तराखण्ड की स्थापना सितम्बर 2005 में भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से विस्तार सुधार कार्यक्रम के अन्तर्गत की गयी थी। राज्य स्तरीय यह स्वायत्त् संस्था सोसायटी अधिनियम 1860 के अन्तर्गत पंजीकृत है, जो निदेशक प्रसार शिक्षा, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के नेतृत्व में प्रसार शिक्षा निदेशालय पंतनगर विश्वविद्यालय से संचालित होती है। यह संस्थान कृषि की गतिविधियों को मजबूती प्रदान करने, प्रबन्धन संचार और सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में सभी कृषि आधारित रेखीय विभागों की मानव संसाधन जरूरतों को पूरा करता है। संस्थान राज्य के कृषि आधारित विभागों के मध्य एवं जमीनी स्तर से जुड़े कर्मचारियों/अधिकारियों के क्षमता निर्माण/विकास हेतु प्रशिक्षण आयोजित करता है.। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय मुख्यतः नवीनतम कृषि प्रौद्योगिकी, प्रसार प्रबन्धन, प्रसार सुधार और सूचना प्रौद्योगिकी होते हैं। संस्थान राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबन्धन संस्थान (मैनेज) हैदराबाद के तकनीकी मार्गदर्शन में कार्य करता है।
3	सम्पर्क सूत्र	:	05944–233336, ई–मेल : dirextedugbp@gmail.com, sametiuttarakhand@gmail.com
4	संस्था का कार्यक्षेत्र	:	उत्तराखण्ड के समस्त 13 जनपद
5	संस्था के उद्देश्य	:	(1) राज्य स्तर पर कृषि विस्तार प्रबन्धन संस्थान के रूप में कार्य करना (2) परियोजना नियोजन, आंकलन एवं संचालन के क्षेत्र में परामर्ष प्रदान करना (3) राज्य के कृषि एवं सम्बद्ध विभाग के मध्यम एवं जमीनी स्तर के प्रसार अधिकारियों एवं कृषक समुदाय के लिए आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना। (4) सार्वजनिक एवं नीजी क्षेत्र के प्रसार अधिकारियों को प्रसार प्रबन्धन सम्बन्धी क्षेत्र में क्षमता विकास/निर्माण में मदद करना (5) मानव संसाधन के बेहतर प्रबन्धन के माध्यम से कृषि प्रसार सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रबन्धन विधियों का विकास एवं इनके प्रयोग को प्रोत्साहन देना। (6) प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कृषि प्रबन्धन, संचार एवं भागीदारी विधियों इत्यादि पर प्रबन्धन इकाई का विकास।
6	संस्था का कार्याधिकारी	:	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड एवं निदेशक प्रसार शिक्षा, गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर।
7	समन्वयक	:	डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय

2. समेटी–उत्तराखण्ड : प्रगति सारांश (वर्ष 2024–25)

पर्वतीय क्षेत्र की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहाँ का रहन सहन अत्यन्त कठिन होता है। छोटे–छोटे सीढ़ीनुमा विखरे खेत, छोटी जोत, वर्षा आधारित कृषि, उन्नत कृषि निवेशों पर सीमित व्यय, मौसम की मार, परम्परागत विधि से खेती, अधसड़े गोबर की खाद का प्रयोग, खरपतवार एवं कीट रोग का प्रकोप इत्यादि प्रायः खेती को अलाभकारी बना देती है। विगत कुछ वर्षो से जंगली जानवरों का प्रकोप से भी कृषक खेती से विमुख होते जा रहे है। दूसरी तरफ उन्नत कृषि तकनीक का प्रयोग कर अनेक काश्तकार खेती को लाभकारी बनाने के साथ–साथ समाज में अपना उत्कृष्ट स्थान भी बना रहे हैं। ऐसे कृषकों को सरकार किसान श्री, किसान भूषण एवं किसान रत्न जैसे सम्मानों से विभूषित भी कर रही है। वर्तमान में उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र के किसी भी गांव में जाने पर अनेक ऐसे कृषक मिल जायेंगे, जिनमें से कोई मशरूम उत्पादन, मत्स्य पालन, मौन पालन, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, जैविक खेती, कुक्कुट पालन, दुग्ध उत्पादन जैसे तकनीक को अपनाकर अपनी आय में कई गुना बढ़ोत्तरी कर रहे हैं। ऐसे सभी कृषक कहीं न कहीं जैसे कृषि विज्ञान केन्द्र, विभाग अथवा शोध केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार अपना रहे हैं।

समेटी द्वारा कृषि एवं सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों हेतु कृषकों के आय संवर्धन, कृषि आधारित स्वरोजगार को दृष्टिगत रखते हुए कृषि निदेशालय, देहरादून एवं विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से विचार–विमर्श करते हुए कुल 15 प्रशिक्षणों का प्रस्ताव स्वीकृत कराया गया। मुख्यतः प्रशिक्षण के विषय उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक, जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक, उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन, आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन, मूल्यवर्धन से आय अर्जन, उन्नत बकरी पालन, रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक, बाजार आधारित प्रसार, ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग, मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम, उन्नत मत्स्य पालन तकनीक, उन्नत बकरी पालन, व्यावसायिक मशरूम उत्पादन, डिजिटल कृषि एवं पौधशाला प्रबन्धन इत्यादि समावेषित थे। संस्थान द्वारा कुल 14 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिससे कुल 389 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। संस्थान द्वारा कुल पांच वित्त पोषित प्रशिक्षण यथा् मैनेज, हैदराबाद के सहयोग से 'बकरी पालन–एक लाभकारी व्यवसाय' प्रशिक्षण, जून 20–22, 2024, जिला प्रशासन, बीजापुर (छत्तीसगढ़) के सहयोग से ग्रामीण महिलाओं हेतु 'जैविक खेती' प्रशिक्षण अगस्त 06–11, 2024, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम, देहरादून के सहयोग से 'विकसित उन्नत कृषि तकनीक' एवं 'उन्नत मत्स्य पालन तकनीक' पर दो प्रशिक्षण क्रमशः दिसम्बर 10, 2024 एवं दिसम्बर 11, 2024 एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी, हरियाणा (भारत सरकार) के सहयोग से प्रसार अधिकारियों के क्षमता विकास हेतु ''प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण के लिए विस्तार अधिकारियों का क्षमता विकास'' प्रशिक्षण जनवरी 07–10, 2025 को आयोजित किये गये। इस प्रकार वर्ष 2024–25 में समेटी व वित्त पोषित कुल 19 प्रशिक्षण आयोजित हुए, जिससे 537 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। इन प्रशिक्षणों में उत्तराखण्ड के समस्त जनपदों से कृषि, उद्यान, पशुपालन, मत्स्य विभाग के प्रसार कार्यकर्ता, कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक, आतमा के पदाधिकारी एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। प्रत्येक प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को कक्षा में पढ़ाई

के साथ–साथ व्यावहारिक क्षमता विकास हेतु विषय से सम्बन्धित प्रायोगिक कक्षाएं एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न शोध केन्द्रों का भ्रमण भी कराया गया। विभिन्न प्रशिक्षणोपरान्त फीड बैक में प्रतिभागियों ने बताया कि यहाँ से सीखे उन्नत कृषि विधाओं को वे कृषकों के बीच ले जायेंगे, तकनीक का प्रचार प्रसार एवं क्षेत्रफल विस्तार कराने का भरपूर प्रयास करेंगे, जिससे कृषक के आय वृद्धि एवं समृद्धि का सपना साकार हो सके।

समेटी एवं मैनेज, हैदराबाद द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित प्रशिक्षण सम्बन्धी ई–बुक "Goat Farming- A Profitable Enterprise for Farmers" ISBN No. 978.81.19663.77.4 प्रकाशित की गयी। कृषि सम्बन्धित लेख कृषि निवेश वितरकों हेतु मील का पत्थर साबित होता डिप्लोमा कोर्स ''डेसी'' भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका ''खेती'' के दिसम्बर 2024 के अंक में प्रकाशित किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका ''पंत प्रसार संदेश'' एवं समेटी वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के फोल्डर प्रकाशित किये गये। पंतनगर विश्वविद्यालय में आयोजित 17वें कृषि विज्ञान सम्मेलन फरवरी 20–22, 2025 में "Empowering farming community of Uttarakhand through training and other extension activities" ,oa "Empowering Agri-Input Dealers: The Impact of the DAESI Program on Agricultural Extension and Sustainability" विषयों पर दो पोस्टर प्रस्तुतिकरण किये गये। दोनों एबस्ट्रैक्ट ई–बुक "Frontier Sciences and Technologies in Agriculture for Developed India (Book of Abstracts) Volume-III" एवं "Volume-IV" में प्रकाशित किये गये हैं। एक कृषि सम्बन्धित लेख ''समेटी–उत्तराखण्ड : कृषक उत्थान में एक हितकारी स्तंभ'' प्रकाशन हेतु प्रेषित किया गया है।

Executive Summary

The limitations of hill agriculture are small and scattered land holdings, rain fed agriculture, terrace farming, less investment in agricultural inputs, unpredictable weather conditions, traditional farming, least use of improved farm implements, use of undecomposed FYM, heavy infestation of weeds and insect pest etc. Now a days, wild animals are emerging as one of the major enemy of hill agriculture leading to turning of farmers in other occupation. However, in the same situation, many farmers are using improved cultivation practices of farming, resulting into enhanced income and are also becoming role model to other farmers. Government also honouring these farmers by the awards like Kisan Shree, Kisan Bhushan and Kisan Ratna etc. under ATMA and other programmes for their moral boost up. Such many farmers can be seen in Kumaon and Garhwal regions who are increasing their income many folds by the adoption of agricultural enterprises like mushroom production, fish farming, bee keeping, protected cultivation, organic farming, poultry and dairy farming etc.

Capacity building is one of the important factor in improving the efficiency and livelihood support of farmers. Realising this, SAMETI used to organize need based and income generating trainings for extension personal and farmers of Uttarakhand. With the consent of Directorate of Agriculture/State Nodal Officer-ATMA, Dehradun and other agricultural scientists, SAMETI-Uttarakhand has taken the approval of need-based trainings through various agricultural department i.e. Kharif Crop Production Technology, Organic Crop and Vegetable Production Technology, Dairy Management, Poultry Farming for Income Generation, Earning Income from Value Addition, Improved Goat Farming, Improved Techniques of Rabi Crop Production, Market Led Extension, Small Scale Industries for Rural Youth, Bee-keeping: A Medium to Generate Self Employment, Fisheries Production Technique, Improved Goat Farming, Commercial Mushroom Production and Digital Agriculture. So, in all 14 trainings had been organized through which 389 trainees benefitted.

As far as sponsored training were concerned, the institute had organized five trainings comparised of online training “Goat Farming- a profitable business” during June 20-22, 2024 with the support of MANAGE, Hyderabad. Training on “Organic Farming” was organized during August 06-11, 2024 with the support of district administration Bijapur, Chattisgarh. Training on “Modern Agriculture Techniques” December 10, 2024 and “Fish Production Techniques” on December 11, 2024 were organized with the financial support of National Cooperative Development Corporation, Dehradun. Training on “Enhancing Performance of Externsion Personnel for Transfer of technology” was organized in collaboration with Extension Education Institute, Nilokheri, Haryana during January 07-10, 2025. In this training total 40 Deputy Project Directors, ATMA and Block Technical Managers from different block of different districts had participated. Through sponsored trainings, total 148 extension officers, KVK scientist and progressive farmers were benefitted. In each training, all the trainees visited different research centres of university for gaining practical knowledge along with the theoretical knowledge. Feedback is a very important aspect after training. In this regard, many trainees told that the knowledge and skill experienced here will be the boon for transferring technologies and area expansion and finally livelihood support of farming community. Overall the institute had organized 19 trainings by which 537 trainees were benefited.

An e-book “Goat Farming- A Profitable Enterprise for Farmers” was jointly published by SAMETI-Uttarakhand and MANAGE, Hyderabad with ISBN No. 978-81-19663-77-4. Popular article ‘कृषि निवेश वितरकों हेतु मील का पत्थर साबित होता डिप्लोमा कोर्स ‘‘डेसी’’’ was published in Kheti Magazine published by ICAR in December 2024 issue. Quarterly hindi magazine “Pant Prasar Sandesh” published by Directorate of Extension Education, G.B. Pant University of Agriculture & Technology, Pantnagar and pamphlet consisting of SAMETI Annual Training Calendar were also published. One popular article ‘समेटी–उत्तराखण्डः कृषक उत्थान में एक हितकारी स्तंभ’ is being communicated for publication. During 17th Agricultural Science Congress February 20-22, 2025 held in GBPUA&T, Pantnagar, two posters “Empowering farming community of Uttarakhand through training and other extension activities” and “Empowering Agri-Input Dealers: The Impact of the DAESI Program on Agricultural Extension and Sustainability” were presented and abstracts of the same were published in e-book Frontier Sciences and Technologies in Agriculture for Developed India (Book of Abstracts) Volume-III and Volume-IV respectively.

समेटी–संगठनात्मक संरचना

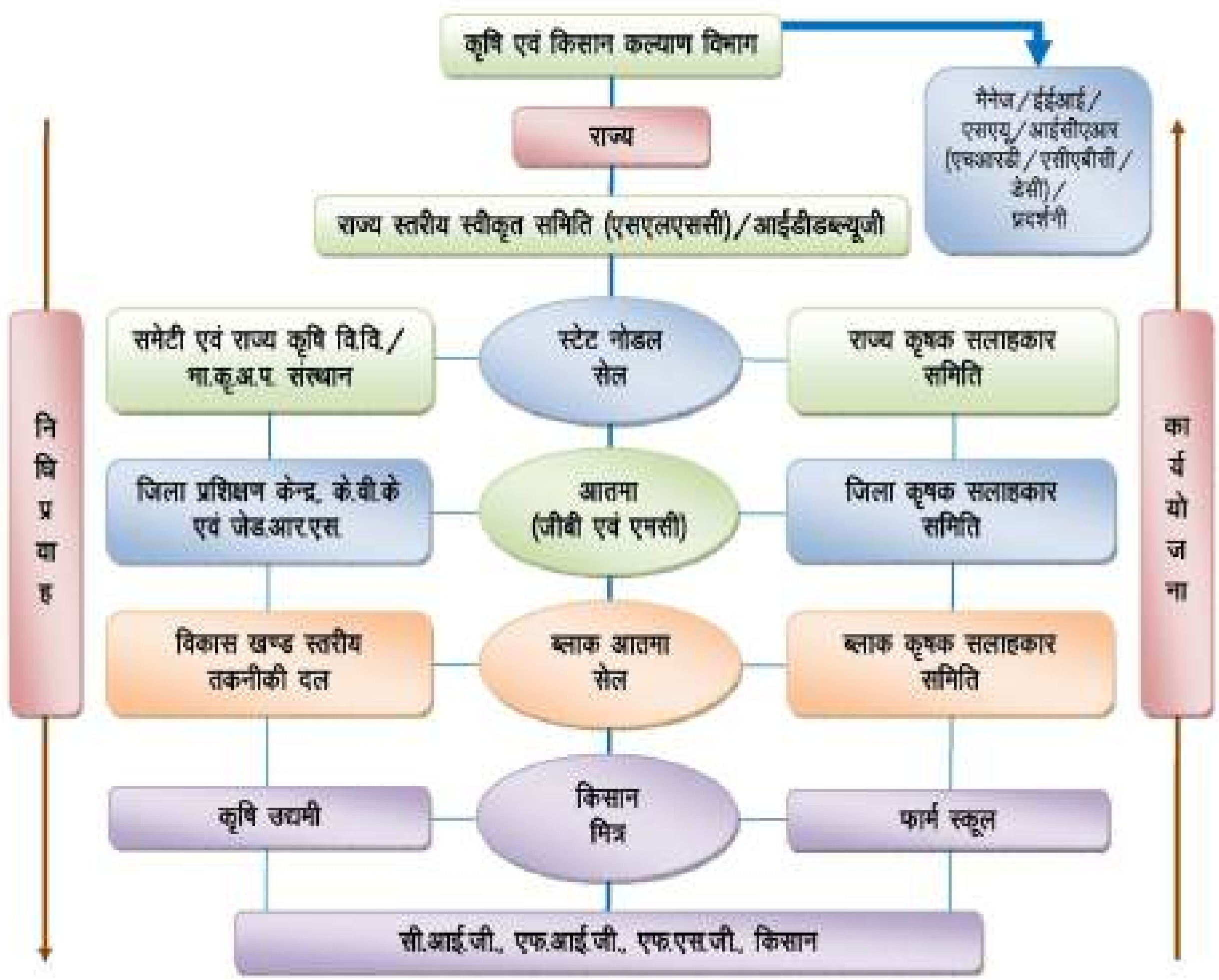

समेटी–उत्तराखण्ड का विभिन्न विभागों के साथ समन्वयन

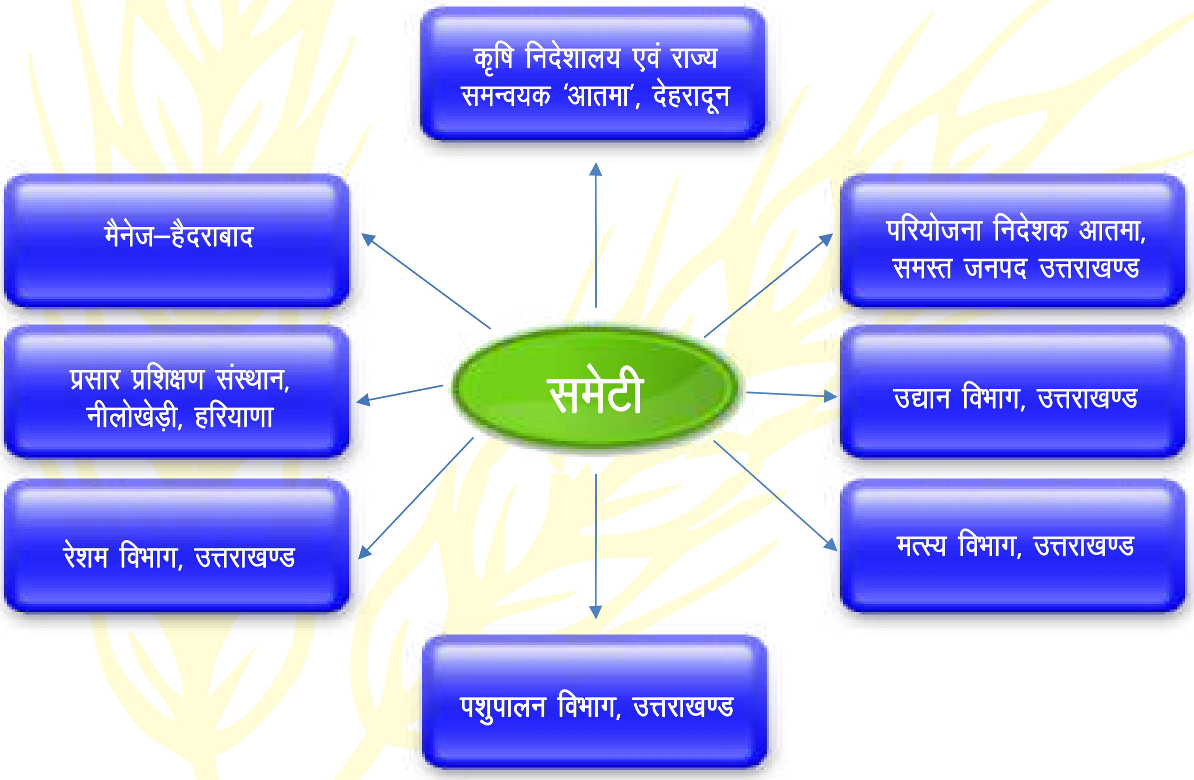

3. प्रशिक्षणों की कार्ययोजना : वर्ष 2024–25

क्र. सं.	विषय	दिनांक / अवधि	विभाग	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिभागी
			अप्रैल, 2024		
1.	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	अप्रैल 24–26, 2024 (तीन दिन)	कृषि विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 अधिकारी / प्रसार कार्यकर्ता / प्रगतिशील कृषक
			मई, 2024		
2.	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	मई 08–11, 2024 (चार दिन)	पशुपालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 कुक्कुट फार्म स्कूलों के संचालक, पशुधन प्रसार अधिकारी, बी.टी.एम., कुक्कुट पालक
3.	उन्नत बकरी पालन	मई 29–31, 2024 (तीन दिन)	कृषि / उद्यान / पशुपालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक एवं विभागीय अधिकारी
			जून, 2024		
4.	जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	जून 05–08, 2024 (चार दिन)	कृषि / उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 विभागीय अधिकारी, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक आदि
			जुलाई, 2024		
5.	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	जुलाई 10–13, 2024 (चार दिन)	पशुपालन / दुग्ध विकास विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील पशुपालक, आतमा / पशुपालन विभाग के अधिकारी
			अगस्त, 2024		
6.	मूल्यवर्धन से आय अर्जन	अगस्त 08–10, 2024 (तीन दिन)	उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 नर्सरी पालक, आतमा के अधिकारी, उद्यान / कृषि विभाग के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक
			सितम्बर, 2024		
7.	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	सितम्बर 26–28, 2024 (तीन दिन)	कृषि / उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 कृषि विभाग / आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक

क्र. सं.	विषय	दिनांक / अवधि	विभाग	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिभागी
			अक्टूबर, 2024		
8.	बाजार आधारित प्रसार	अक्टूबर 23–25, 2024 (तीन दिन)	कृषि / उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक / उद्यान / कृषि / आतमा के अधिकारी
			नवम्बर, 2024		
9.	ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग	नवम्बर 20–23, 2024 (चार दिन)	कृषि / उद्यान / सहकारी विभाग	30	कृषि / उद्यान / सहकारी विभाग के अधिकारी / आतमा एवं प्रगतिशील कृषक
10.	मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम	नवम्बर 27–30, 2024 (चार दिन)	कृषि / उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 मधुमक्खी पालक / उद्यान / कृषि / आतमा के अधिकारी
			दिसम्बर, 2024		
11.	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	दिसम्बर 11–14, 2024 (चार दिन)	मत्स्य पालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील मत्स्य पालक / विभागीय अधिकारी
12.	उन्नत बकरी पालन	दिसम्बर 18–20, 2024 (तीन दिन)	कृषि / उद्यान / पशुपालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक एवं विभागीय अधिकारी
			जनवरी, 2025		
13.	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	जनवरी 15–18, 2025 (चार दिन)	कृषि / उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 मशरूम उत्पादक, उद्यान, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक आदि
			फरवरी, 2025		
14.	डिजिटल कृषि	फरवरी 19–21, 2025 (तीन दिन)	कृषि विभाग	30	बागेश्वर, चम्पावत, रूद्रप्रयाग से 2–2 एवं शेष जनपदों से 3–3 कृषि विभाग के अधिकारी, प्रगतिशील कृषक आदि
			मार्च, 2025		
15.	पौधशाला प्रबन्धन	मार्च 05–07, 2025 (तीन दिन)	समस्त रेखीय विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 नर्सरी पालक एवं विभागीय अधिकारी

4. आयोजित प्रशिक्षण में जनपदवार प्रतिभागियों की उपस्थिति

क्र.सं.	प्रशिक्षण विषय	प्रशिक्षण अवधि	जनपदवार प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति													योग (प्रशिक्षणार्थी)
			नैनीताल	देहरादून	हरिद्वार	ऊ.सिं.नगर	अल्मोड़ा	उत्तरकाशी	पौड़ी गढ़वाल	टिहरी गढ़वाल	चम्पावत	पिथौरागढ़	चमोली	रूद्रप्रयाग	बागेश्वर	
1	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	जून 06–08, 2024	3	-	-	7	3	4	-	-	-	2	-	8	-	**27**
2	जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	जून 12–15, 2024	-	-	2	9	-	-	4	-	-	2	-	8	-	**25**
3	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	जुलाई 10–13, 2024	8	-	3	14	8	-	12	-	-	-	2	6	-	**53**
4	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	जुलाई 24–27, 2024	3	-	-	10	7	-	11	-	-	-	-	-	-	**31**
5	मूल्यवर्धन से आय अर्जन	अगस्त 08–10, 2024	2	-	-	17	3	-	-	-	-	-	-	-	-	**22**
6	उन्नत बकरी पालन	अगस्त 21–23, 2024	-	5	2	11	2	-	-	-	4	-	-	-	4	**28**
7	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	सितम्बर 26–28, 2024	2	7	4	8	2	-	2	-	2	-	4	-	-	**31**
8	बाजार आधारित प्रसार	अक्टूबर 23–25, 2024	2	-	-	11	-	-	5	-	-	-	-	-	-	**18**
9	ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग	नवम्बर 20–23, 2024	1	-	-	19	1	-	-	-	-	-	-	-	-	**21**
10.	मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम	नवम्बर 28–दिसम्बर 01, 2024	2	-	-	6	3	-	7	-	-	-	-	9	-	**27**
11.	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	दिसम्बर 11–14, 2024	3	4	5	12	3	-	5	-	-	-	-	-	-	**32**
12.	उन्नत बकरी पालन	दिसम्बर 18–20, 2024	4	-	2	14	4	-	7	-	-	-	-	-	-	**31**
13.	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	जनवरी 15–18, 2025	9	-	-	15	5	-	4	-	-	-	-	-	-	**33**
14.	डिजिटल कृषि	फरवरी 06–08, 2025	-	1	-	7	2	-	-	-	-	-	-	-	-	**10**
		कुल योग	**39**	**17**	**18**	**160**	**43**	**04**	**57**	**-**	**06**	**04**	**06**	**31**	**04**	**389**

जनपदवार प्रतिभागियों की उपस्थिति (प्रतिशत में)

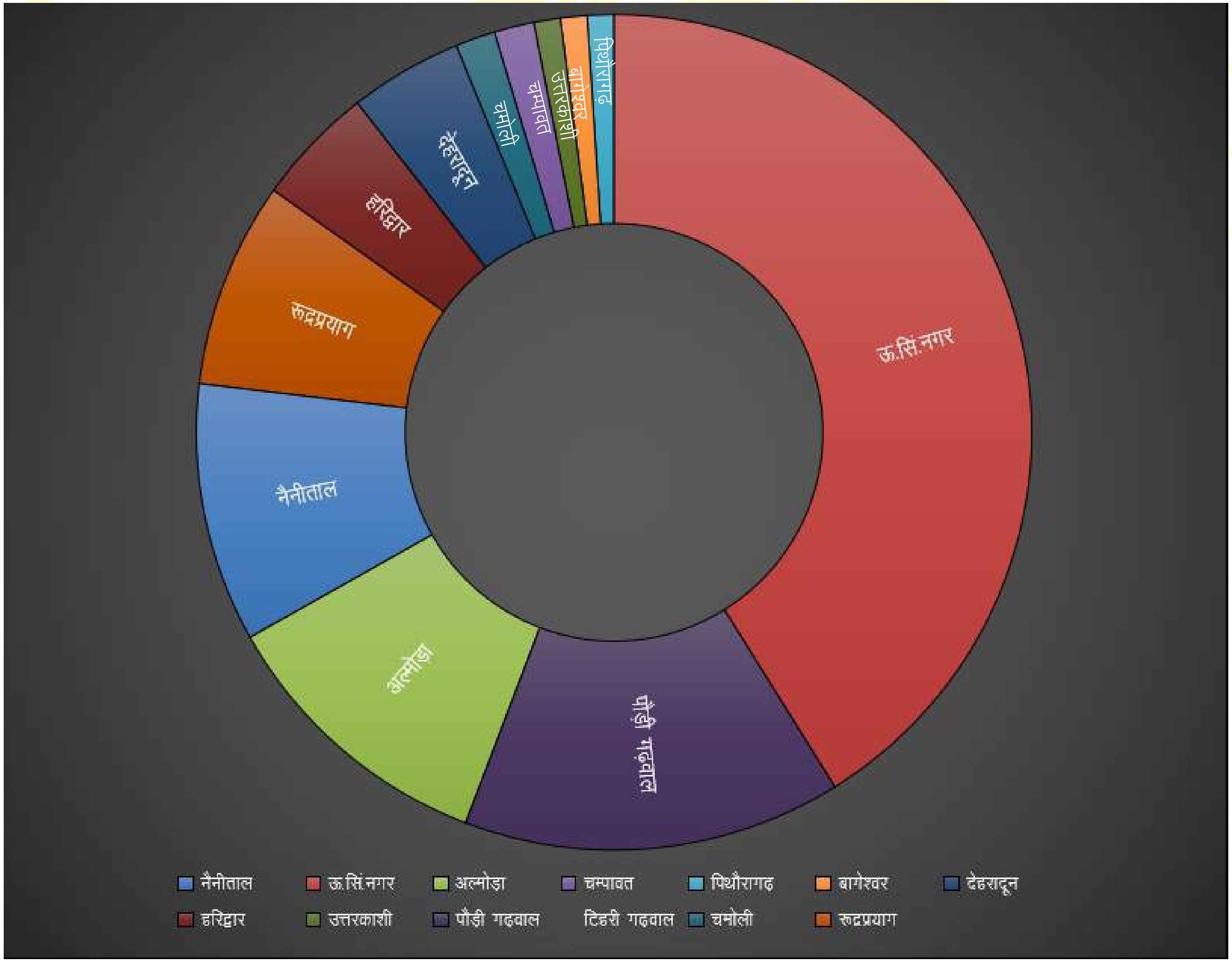

प्रशिक्षण में कुमाऊँ मंडल के प्रतिभागियों की उपस्थिति

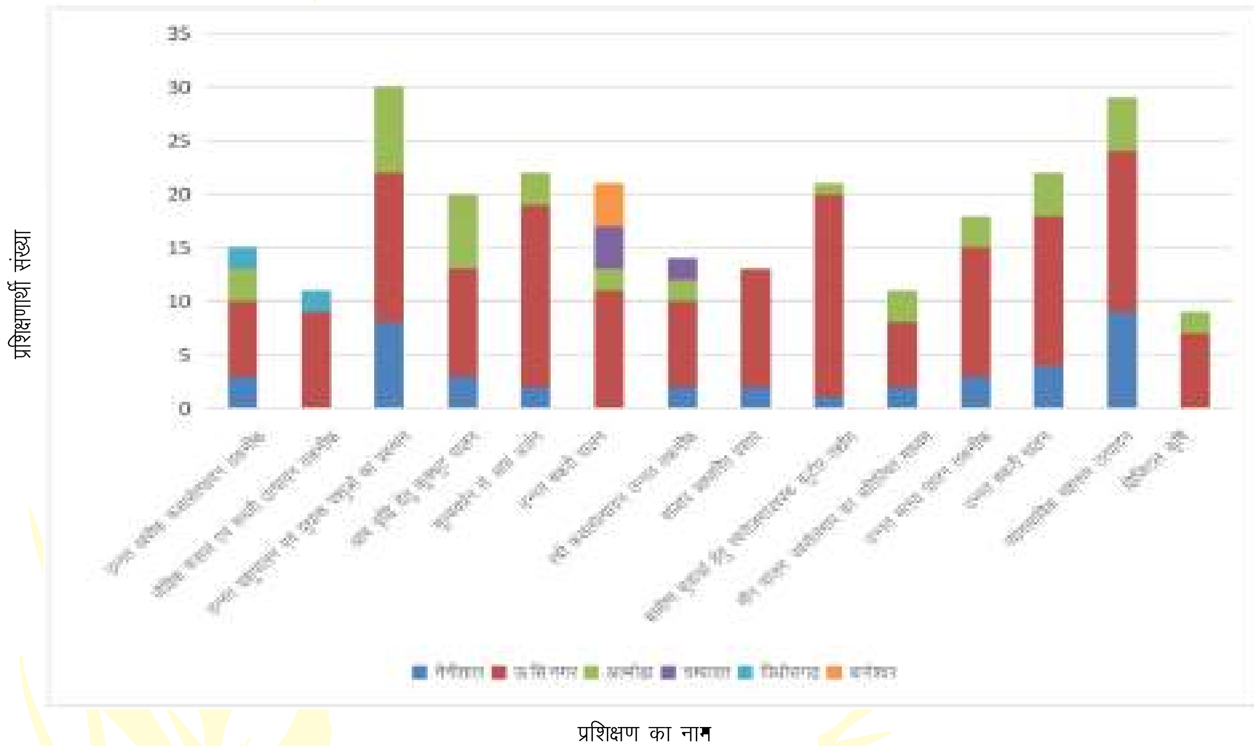

प्रशिक्षण में गढ़वाल मंडल के प्रतिभागियों की उपस्थिति

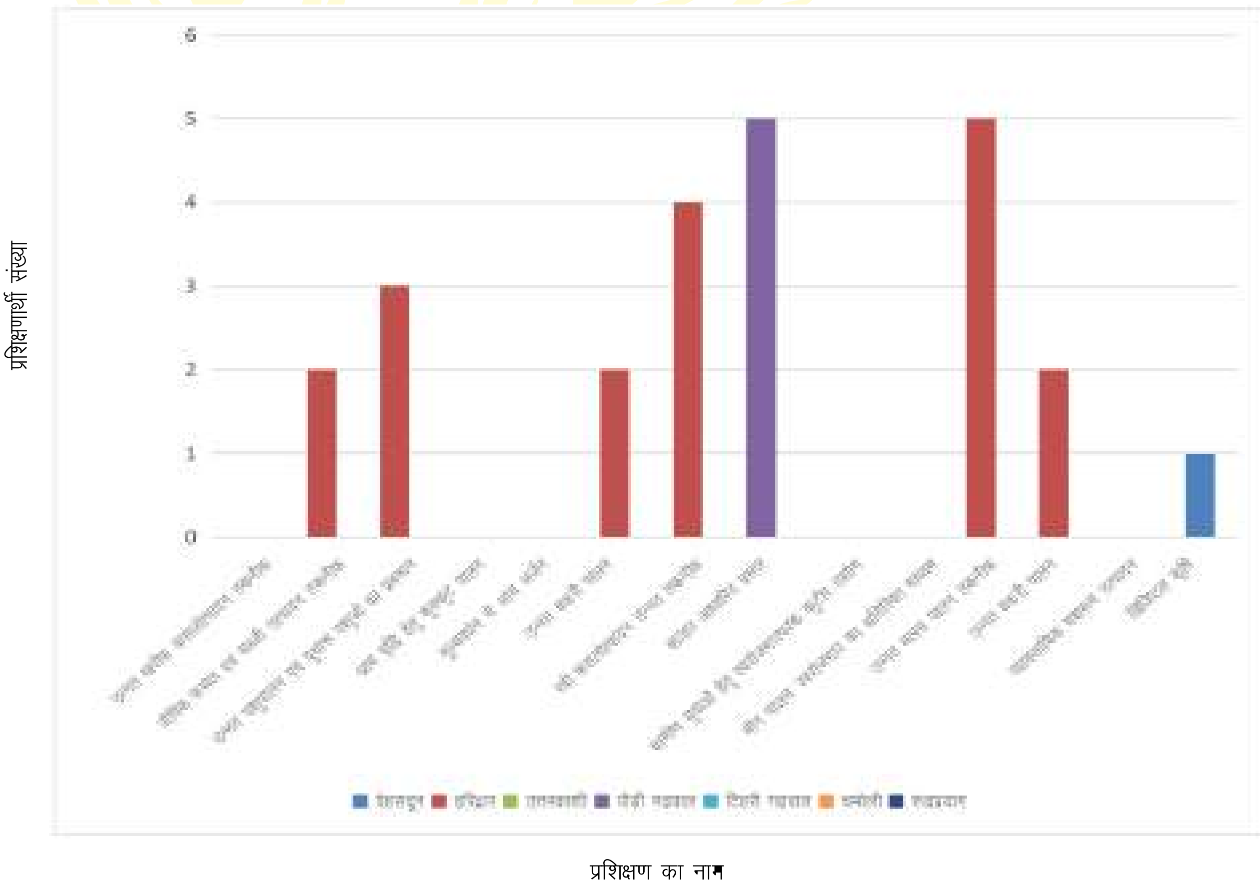

5. आयोजित प्रशिक्षणों का संक्षिप्त विवरण

अ. कार्ययोजनानुसार प्रशिक्षण

5.1 उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक : संस्थान द्वारा 'उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक' प्रशिक्षण का आयोजन जून 06–08, 2024 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा ने कहा कि उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर उपज में कई गुना बढ़ोत्तरी की जा सकती है। आपने विशेष रूप से कहा कि खेतों में वर्षा ऋतु में प्रायः पानी का जमाव हो जाता है। अतः खेत में आवश्यक रूप से जल निकास का प्रबन्ध रखना चाहिए। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा धान उत्पादन हेतु उन्नत सस्य विधियाँ, खरीफ दलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकी, उन्नत मक्का उत्पादन तकनीक, खरीफ फसलों में समन्वित पोषक तत्व प्रबन्धन, खरीफ तिलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकी, जैविक खरीफ फसलोत्पादन तकनीक, खरीफ फसलों के प्रमुख खरपतवार एवं उनका प्रबन्धन, खरीफ फसलों के प्रमुख रोग एवं उनका समन्वित प्रबन्धन, खरीफ फसलों के प्रमुख कीट एवं उनका समन्वित प्रबन्धन, प्रमुख पर्वतीय खरीफ फसलें एवं उनके उत्पादन तकनीक एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को फसल अनुसंधान केन्द्र पर अन्य गतिविधियों हेतु भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण में सीखे गये विषयों को अपनाने एवं अन्य कृषकों को भी जानकारी साझा करने की अपील की। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, उत्तरकाशी, रूद्रप्रयाग, अल्मोड़ा एवं पिथौरागढ़ के 27 प्रसार कार्यकर्ता एवं कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

जैविक फसल उत्पादन की जानकारी देते वैज्ञानिक

समय	विवरण	वार्ताकार
	जून 06, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	धान उत्पादन हेतु उन्नत सस्य विधियाँ	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं निदेशक प्रसार शिक्षा
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	खरीफ दलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकी	डा0 बी0एस0 कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	उन्नत मक्का उत्पादन तकनीक	डा0 अमित भटनागर, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	

16.15–17.30	खरीफ फसलों में समन्वित पोषक तत्व प्रबन्धन	डा0 अरविन्द त्यागी, सह प्राध्यापक मृदा विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
	जून 07, 2024	
10.00–11.15	खरीफ तिलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकी	डा0 अजय श्रीवास्तव, सहा0 प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	जैविक खरीफ फसलोत्पादन तकनीक (स्थलः जैविक प्रक्षेत्र, फसल अनुसंधान केन्द्र)	डा0 डी0के0 सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	फसल अनुसंधान केन्द्र पर अन्य गतिविधियों हेतु भ्रमण	डा0 गुरविन्दर सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
	जून 08, 2024	
10.00–11.15	खरीफ फसलों के प्रमुख खरपतवार एवं उनका प्रबन्धन	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	खरीफ फसलों के प्रमुख रोग एवं उनका समन्वित प्रबन्धन	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक (पादप रोग) प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	खरीफ फसलों के प्रमुख कीट एवं उनका समन्वित प्रबन्धन	डा0 जे0पी0 पुरवार, सहा0 प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–17.00	प्रमुख पर्वतीय खरीफ फसलें एवं उनके उत्पादन तकनीक	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय
17.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.2 जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीकः संस्थान द्वारा 'जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक' प्रशिक्षण का आयोजन जून 12–15, 2024 तक किया गया। समेटी समन्वयक डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) ने प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के जैविक कृषि से सम्बन्धित वैज्ञानिकों द्वारा जैविक खेती– परिचय, सिद्धान्त, विभिन्न जैविक कृषि निवेश, उत्तराखण्ड में जैविक कृषि की सम्भावनाएं एवं लाभ, सब्जियों की जैविक विधि से खेती विशेषतः पॉलीहाउस में

फसल अनुसंधान केन्द्र का भ्रमण करते प्रशिक्षणार्थी

जैविक टमाटर, शिमला मिर्च एवं खीरा उत्पादन तकनीक, जैविक कृषि के अन्तर्गत शेषक तत्व प्रबन्धन, जैविक फसल उत्पादन तकनीक, पॉलीहाउस की संरचना एवं सूक्ष्म सिंचाई

तकनीक का प्रयोग, कृषक स्तर पर जैविक कृषि की सम्भावनायें व विस्तार, विभिन्न जैव उर्वरक, जैव रसायन एवं उनकी प्रयोग विधियाँ, जैविक फसलों के प्रमाणीकरण की विधियाँ एवं प्रमाणीकरण से होने वाले लाभ, जैविक उर्वरकों के प्रयोग में बरते जाने वाली सावधानियाँ, प्राकृतिक खेती, फसल एवं सब्जियों में जैविक कीट रोग नियंत्रण एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को जैविक उत्पादन प्रखण्ड, ट्रीट एवं अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण कराया गया जहाँ उन्हें जैविक खेती सम्बन्धी नवीनतम विकसित तकनीक और अन्य विधायें सिखाई गयी। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण में सीखे गये विषयों को अपनाने एवं अन्य कृषकों को भी जानकारी साझा करने की अपील की। आपने विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्र के कृषकों से कहा कि आप लोग जैविक खेती अपनाकर पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ उच्च गुणवत्ता के उत्पाद बाजार में लाकर अपने आय में कई गुना वृद्धि कर सकते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–पौड़ी गढ़वाल, रूद्रप्रयाग, हरिद्वार, पिथौरागढ़ एवं ऊधम सिंह नगर के 25 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
	जून 12, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	जैविक खेती– परिचय, सिद्धान्त, विभिन्न जैविक कृषि निवेश, उत्तराखण्ड में जैविक कृषि की सम्भावनाएं एवं लाभ	डा0 धनंजय कुमार सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	सब्जियों की जैविक विधि से खेती विशेषतः पॉली हाउस में जैविक टमाटर, शिमला मिर्च एवं खीरा उत्पादन तकनीक	डा0 अनिल चन्द्रा, सब्जी वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	जैविक कृषि के अन्तर्गत पोषक तत्व प्रबन्धन	डा0 अरविन्द कुमार त्यागी, सह प्राध्यापक मृदा विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	जैविक फसल उत्पादन तकनीक	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं निदेशक प्रसार शिक्षा
	जून 13, 2024	
10.00–11.15	पॉली हाउस की संरचना एवं सूक्ष्म सिंचाई तकनीक का प्रयोग	डा0 पी0के0 सिंह, प्राध्यापक सिंचाई एवं जल निकास प्रौद्योगिकी महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	कृषक स्तर पर जैविक कृषि की सम्भावनायें व विस्तार	डा0 सी0 तिवारी, प्राध्यापक एवं प्रभारी अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	

14.30–16.00	जैविक सब्जी उत्पादन हेतु न्यूनतम साझा कार्यक्रम	डा0 रूपाली शर्मा, प्राध्यापक पादप रोग विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	विभिन्न जैव उर्वरक, जैव रसायन एवं उनकी प्रयोग विधियाँ	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
	जून 14, 2024	
10.00–11.15	जैविक फसलों के प्रमाणीकरण की विधियाँ एवं प्रमाणीकरण से होने वाले लाभ	डा0 धनंजय कुमार सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	भोजनावकाश	
14.30–15.30	जैविक उर्वरकों के प्रयोग में बरते जाने वाली सावधानियाँ	डा0 अजय वीर सिंह, प्राध्यापक, सूक्ष्म जीव विज्ञान, विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय
15.30–17.30	जैविक उत्पादन प्रखण्ड एवं अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण	डा0 एस0के0 यादव, सह प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग
	जून 15, 2024	
10.00–11.15	प्राकृतिक खेती	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30		
11.30–13.00	फसल एवं सब्जियों में जैविक कीट रोग नियंत्रण	डा0 आर0पी0 मौर्या, सह प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	ट्रीट एवं अन्य इकाईयों का भ्रमण	
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.3 उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन : संस्थान द्वारा 'उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन' प्रशिक्षण का आयोजन जुलाई 10–13, 2024 तक किया गया। उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कहा कि पशुपालन एक ऐसा व्यवसाय है, जिससे कृषक अपनी आय में दो से चार गुना वृद्धि कर सकते हैं। आपने विशेष रूप से दूध के मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे खोया, पनीर, चीज, आईसक्रीम, मिष्ठान द्वारा त्वरित आय संवर्धन का सलाह दिया। डा0 आर0के0 शर्मा, विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन ने उपस्थित कृषकों से कहा कि उन्नत पशुपालन

प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रबन्धन द्वारा न सिर्फ अपने पशुओं से दूध की मात्रा में बढ़ोत्तरी बल्कि पर्याप्त गोबर की खाद की उपलब्धता से जैविक कृषि की राह पर चला जा सकता है। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने प्रतिभागियों का

स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा किये जा रहे कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से चर्चा की। प्रशिक्षण में पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा नये डेयरी को प्रारम्भ कैसे करें एवं ध्यान रखने योग्य बातें, पशुओं की आवास व संतुलित आहार प्रबन्धन, पशुओं में नस्ल सुधार एवं प्रजनन विधियाँ, पशुओं में प्रजनन विकार, गर्भित पशु की देखभाल एवं नवजात पशु प्रबन्धन, डेयरी उत्पादन का आर्थिक लेखा–जोखा, पशुओं के प्रमुख रोगः कारण एवं निवारण, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन की महत्ता एवं उसके विभिन्न उत्पाद, पशुओं के विभिन्न संक्रामक रोग एवं बचाव हेतु टीकाकरण/प्रबन्धन, पशु परजीवी रोग एवं पशुपालन से सम्बन्धित चर्चा (समस्या एवं निदान), डेयरी उत्पादों का विपणन प्रबन्धन एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को शैक्षणिक डेयरी फार्म नगला, पशु उत्पादन प्रबन्धन विभाग तथा अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–पौड़ी गढ़वाल, रूद्रप्रयाग, हरिद्वार, नैनीताल, चमोली, अल्मोड़ा एवं ऊधम सिंह नगर के 53 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
	जुलाई 10, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	नये डेयरी को प्रारम्भ कैसे करें एवं ध्यान रखने योग्य बातें	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	पशुओं की आवास व्यवस्था	डा0 एस0के0 सिंह, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग पशुचिकित्सा महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	पशुओं हेतु संतुलित आहार प्रबन्धन	डा0 अंशु रहल, सहा0 प्राध्यापक पशु पोषण विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	पशुओं में नस्ल सुधार एवं प्रजनन विधियाँ	डा0 बी0एन0 शाही, सह प्राध्यापक पशु आनुवांशिकी एवं प्रजनन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
	जुलाई 11, 2024	
10.00–11.15	पशुओं में नियमित प्रजनन एवं प्रजनन विकार	डा0 सुनील कुमार, सहा0 प्राध्यापक पशु मादा रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	गर्भित पशु की देखभाल एवं नवजात पशु प्रबन्धन	डा0 संजय चौधरी, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	डेयरी उत्पादन का आर्थिक लेखा–जोखा	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय

16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	पशुओं के प्रमुख रोगः कारण एवं निवारण	डा0 विद्यासागर सिंह, सह प्राध्यापक पशु परजीवी विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
	जुलाई 12, 2024	
10.00–11.15	स्वच्छ दुग्ध उत्पादन की महत्ता एवं उसके विभिन्न उत्पाद	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	पशुओं के विभिन्न संक्रामक रोग एवं बचाव हेतु टीकाकरण/प्रबन्धन	डा0 निधि अरोरा, प्राध्यापक पशु औषधि विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–17.00	ट्रीट एवं अन्य इकाईयों का भ्रमण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय
	जुलाई 13, 2024	
10.00–11.15	पशु परजीवी रोग एवं पशुपालन से सम्बन्धित चर्चा (समस्या एवं निदान)	डा0 राजीव रंजन, सह प्राध्यापक पशु परजीवी विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	डेयरी उत्पादों का विपणन प्रबन्धन	डा0 स्नेहा दोहरे, सहा0 प्राध्यापक कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.4 आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन : संस्थान द्वारा 'आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन' प्रशिक्षण का आयोजन जुलाई 24–27, 2024 तक किया गया। उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कहा कि कुक्कुट पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो कृषकों की पर्याप्त आय वृद्धि में सहायक होगा। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित कुक्कुटो की प्रजातियों का प्रयोग कर कृषक अण्डे एवं मांस दोनों का विपणन कर अपनी आजीविका में दो से चार गुना बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने उपस्थित अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण के विषय वस्तु एवं शोध केन्द्रों के भ्रमण के बारे में चर्चा की। आपने बताया कि प्रशिक्षण में

कुक्कुट प्रक्षेत्र का भ्रमण करते प्रशिक्षणार्थी

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा कुक्कुटों की विभिन्न प्रजातियाँ– परिचय, अण्डा और मांस देने वाले कुक्कुटों में आहार प्रबन्धन एवं गुणवत्ता नियंत्रण, बैकयार्ड कुक्कुट पालन, गिनी मुर्गी पालन प्रबन्धन, मुर्गियों का आवास प्रबन्धन, चूजो एवं

पठोरों की प्रबन्धन व्यवस्था, बदलते मौसम में कुक्कुटों का प्रबन्धन व परजीवी रोग, कुक्कुटों में रोग प्रबन्धन व टीकाकरण, कृषक स्तर पर मुर्गी पालन : समस्या एवं समाधान, कुक्कुट पालन प्रबन्धन तकनीक एवं आर्थिक विवरण, कुक्कुट पालन सम्बन्धी व्यावहारिक जानकारियाँ, कृषकों की आय में वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन, कुक्कुट पालन सम्बन्धी समस्याएं एवं निदान, कुक्कुट उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन तथा कृषकोपयोगी प्रमुख स्वरोजगारपरक कृषि कार्यक्रम इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के शैक्षणिक डेयरी एवं कुक्कुट प्रक्षेत्र, नगला सहित अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–नैनीताल, ऊधम सिंह नगर, अल्मोड़ा एवं पौड़ी गढ़वाल के 31 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
	जुलाई 24, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	कुक्कुटों की विभिन्न प्रजातियाँ– परिचय	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	अण्डा और मांस देने वाले कुक्कुटों में आहार प्रबन्धन एवं गुणवत्ता नियंत्रण	डा0 ज्योति पलोड, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	बैकयार्ड कुक्कुट पालन	डा0 शिव कुमार, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	गिनी मुर्गी पालन प्रबन्धन	डा0 ब्रजेश सिंह, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग
	जुलाई 25, 2024	
10.00–11.15	मुर्गियों का आवास प्रबन्धन	डा0 संजय चौधरी, प्राध्यापक (पशुपालन) प्रसार शिक्षा निदेशालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	चूजो एवं पठोरों की प्रबन्धन व्यवस्था	डा0 अनिल कुमार, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	बदलते मौसम में कुक्कुटों का प्रबन्धन व परजीवी रोग	डा0 विद्यासागर सिंह, सह प्राध्यापक पशु परजीवी विभाग
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	कुक्कुटों में रोग प्रबन्धन व टीकाकरण	डा0 राजीव रंजन, सह प्राध्यापक पशु परजीवी विभाग

जुलाई 26, 2024		
10.00–11.15	कृषक स्तर पर मुर्गी पालन : समस्या एवं समाधान	डा0 अनिल सैनी, प्राध्यापक (पशुपालन), कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	कुक्कुट पालन प्रबन्धन तकनीक एवं आर्थिक विवरण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	कुक्कुट फार्म का भ्रमण एवं कुक्कुट पालन सम्बन्धी व्यावहारिक जानकारियाँ (स्थल–शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला)	डा0 एस0के0 सिंह, संयुक्त निदेशक शैक्षणिक डेयरी व कुक्कुट फार्म
16.00–17.30	कृषकों की आय में वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन, कुक्कुट पालन सम्बन्धी समस्याएं एवं निदान (स्थल–शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला)	डा0 रिपुसूदन कुमार, सह निदेशक शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला
जुलाई 27, 2024		
10.00–11.15	कुक्कुट उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	कृषकोपयोगी प्रमुख स्वरोजगारपरक कृषि कार्यक्रम	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	शोध केन्द्रों का भ्रमण	
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.5 मूल्यवर्धन से आय अर्जन : संस्थान द्वारा 'मूल्यवर्धन से आज अर्जन' प्रशिक्षण का आयोजन अगस्त 08–10, 2024 तक किया गया। उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कहा कि आधुनिक कृषि में मूल्यवर्धन एक ऐसा अस्त्र है, जिससे किसान अपनी आय में त्वरित वृद्धि कर सकते हैं। समेटी समन्वयक, डा0 बी0डी0 सिंह ने उपस्थित अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ मोटे अनाजों, सब्जियों व हस्तशिल्प से मूल्यवर्धन के बारे में विस्तार से चर्चा किये। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा फल एवं सब्जी प्रसंस्करणः व्यावसायिक परिरक्षण की जानकारी– कब, कैसे और कहाँ शुरू करें, फल सब्जी के मूल्यवर्धन से सफलता का मार्ग, धान्य फसलों के मूल्यवर्धन से आय अर्जन, मशरूम के

मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने का व्यावहारिक प्रशिक्षण

मूल्यवर्धन से आय सृजन का राह, बाजार में उपलब्ध फलों के पेय पदार्थ से मूल्यवर्धन तथा फल एवं सब्जियों का लम्बे समय तक रखरखाव, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ की जानकारी, कलात्मक मोमबत्ती एवं एपण निर्माण : आय का स्त्रोत, मोटे अनाज के बेकरी उत्पाद : आय सृजन का सशक्त माध्यम, सोयाबीन प्रसंस्करण तकनीकः सोया

पनीर, ओकारा एवं सोयाबीन के पौष्टिक तथा स्वादिश्ट व्यंजन, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन की महत्ता एवं विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पाद, आय वृद्धि हेतु मत्स्य प्रसंस्करण, विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पादों का विपणन प्रबन्धन एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के शैक्षणिक डेयरी एवं कुक्कुट प्रक्षेत्र, नगला सहित अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–नैनीताल, अल्मोड़ा एवं ऊधम सिंह नगर के कुल 22 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
	अगस्त 08, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	फल एवं सब्जी प्रसंस्करणः व्यावसायिक परिरक्षण की जानकारी– कब, कैसे और कहाँ शुरू करें	डा0 पी0के0 ओमरे, प्राध्यापक पोस्ट हार्वेस्ट, प्रोसेस एण्ड फूड इंजीनियरिंग विभाग, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	फल सब्जी के मूल्यवर्धन से सफलता का मार्ग	डा0 नीतू डोभाल, सह प्राध्यापक गृह विज्ञान महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	धान्य फसलों के मूल्यवर्धन से आय अर्जन	डा0 श्वेता राय, सहा0 प्राध्यापक खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	मशरूम के मूल्यवर्धन से आय सृजन का राह	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक (पादप रोग) प्रसार शिक्षा निदेशालय
	अगस्त 09, 2024	
10.00–11.15	बाजार में उपलब्ध फलों के पेय पदार्थ से मूल्यवर्धन तथा फल एवं सब्जियों का लम्बे समय तक रखरखाव, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ की जानकारी	डा0 शशि तिवारी, वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	कलात्मक मोमबत्ती एवं एपण निर्माण : आय का स्त्रोत (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 सुधा जुकारिया, प्राध्यापक (गृह विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	मोटे अनाज के बेकरी उत्पाद : आय सृजन का सशक्त माध्यम (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 प्रतिभा सिंह, प्राध्यापक गृह विज्ञान कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
16.00–16.15	**चाय**	

16.15–17.30	सोयाबीन प्रसंस्करण तकनीकः सोया पनीर, ओकारा एवं सोयाबीन के पौष्टिक तथा स्वादिष्ट व्यंजन (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 प्रतिभा सिंह, प्राध्यापक गृह विज्ञान कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
	अगस्त 10, 2024	
10.00–11.15	स्वच्छ दुग्ध उत्पादन की महत्ता एवं विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पाद	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	आय वृद्धि हेतु मत्स्य प्रसंस्करण	डा0 एस0के0 शर्मा, सहा0 प्राध्यापक कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पादों का विपणन प्रबन्धन	डा0 रूचि गंगवार, सहायक प्राध्यापक कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–17.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
17.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.6 उन्नत बकरी पालन : संस्थान द्वारा 'उन्नत बकरी पालन' प्रशिक्षण का आयोजन अगस्त 21–23, 2024 तक किया गया। उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कहा कि बकरी पालन विधा लघु एवं मध्यम किसानों हेतु अत्यन्त लाभकारी हो सकता है। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने कहा कि देश में मटन की बढ़ती मांग को देखते हुए कृषक इस उद्यम को अपनाकर लाभ ले सकते हैं। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा बकरियों की विभिन्न प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन, बकरियों में आहार प्रबन्धन, बकरियों में आवास प्रबन्धन, बकरियों में प्रजनन प्रबन्धन, बकरी उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, बकरियों पालन का आर्थिक लेखा–जोखा एवं क्रय–विक्रय, बकरियों के प्रमुख रोग एवं टीकाकरण, बकरियों में परजीवी रोग एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के बकरी इकाई सहित अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–देहरादून, उधम सिंह नगर, बागेश्वर, अल्मोड़ा, हरिद्वार एवं चम्पावत के कुल 28 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

बकरी पालन इकाई का भ्रमण करते हुए प्रशिक्षणार्थी

समय	विवरण	वार्ताकार
	अगस्त 21, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	बकरियों की विभिन्न प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	बकरियों में आहार प्रबन्धन	डा0 ज्योति पलोड, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	बकरियों में आवास प्रबन्धन	डा0 संजय चौधरी, प्राध्यापक (पशुपालन) प्रसार शिक्षा निदेशालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	बकरी इकाई का भ्रमण (पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग)	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
	अगस्त 22, 2024	
10.00–11.15	बकरियों में प्रजनन प्रबन्धन	डा0 सुनील कुमार, सहा0 प्राध्यापक पशु मादा रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	बकरी उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–15.30	बकरियों पालन का आर्थिक लेखा–जोखा एवं क्रय–विक्रय	डा0 एस0के0 सिंह, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग पशुचिकित्सा महाविद्यालय
15.30–17.30	ट्रीट एवं अन्य इकाईयों का भ्रमण	
	अगस्त 23, 2024	
10.00–11.15	बकरियों के प्रमुख रोग एवं टीकाकरण	डा0 निधि अरोरा, प्राध्यापक पशु औषधि विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	बकरियों में परजीवी रोग	डा0 विद्यासागर सिंह, सह प्राध्यापक पशु परजीवी विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
16.00–17.00	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.7 रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक : संस्थान द्वारा 'रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक' प्रशिक्षण का आयोजन सितम्बर 26–28, 2024 तक किया गया। उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कहा कि रबी फसलों में विशेष रूप से मसूर, मटर, चना जैसे दलहनी फसलों की खेती कर किसान न सिर्फ अपने खेत के मृदा का स्वास्थ्य सुधार सकते है बल्कि इनके विक्रय से तुलनात्मक रूप से अधिक आय अर्जित कर सकते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने उपस्थित अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा रबी धान्य फसलों की वैज्ञानिक खेती, गेहूँ व अन्य रबी फसलों की उन्नत प्रजातियाँ– किसानों हेतु वरदान, रबी दलहनी फसलों की उन्नत खेती, रबी तिलहनी फसलों की उन्नत खेती, रबी फसलों में समन्वित उर्वरक प्रबन्धन, पर्वतीय क्षेत्रों में रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती, रबी फसलों में सिंचाई प्रबन्धन, रबी फसलों में खरपतवार प्रबन्धन, रबी फसलों के प्रमुख रोग एवं प्रबन्धन तथा रबी फसलों के प्रमुख कीट एवं प्रबन्धन इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के फसल अनुसंधान केन्द्र व अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–अल्मोड़ा, देहरादून, हरिद्वार, उधम सिंह नगर, पौड़ी गढ़वाल, चम्पावत, चमोली एवं नैनीताल के कुल 31 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

फसल अनुसंधान केन्द्र में लगे मंडुवा के बारे में जानकारी देते वैज्ञानिक

समय	विवरण	वार्ताकार
	सितम्बर 26, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	रबी धान्य फसलों की वैज्ञानिक खेती	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं निदेशक प्रसार शिक्षा
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	गेहूँ व अन्य रबी फसलों की उन्नत प्रजातियाँ– किसानों हेतु वरदान	डा0 जय प्रकाश जायसवाल प्राध्यापक (पादप प्रजनन)
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	रबी दलहनी फसलों की उन्नत खेती	डा0 बी0एस0 कार्की, सेवानिवृत्त प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	रबी तिलहनी फसलों की उन्नत खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
	सितम्बर 27, 2024	
10.00–11.15	रबी फसलों में समन्वित उर्वरक प्रबन्धन	डा0 अरविन्द कुमार त्यागी, सह प्राध्यापक, मृदा विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	पर्वतीय क्षेत्रों में रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती	डा0 कंचन नैनवाल, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–17.30	रबी फसलों में सिंचाई प्रबन्धन (स्थलः– फसल अनुसंधान केन्द्र व अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण)	डा0 गुरविन्दर सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान, कृषि महाविद्यालय
	सितम्बर 28, 2024	
10.00–11.15	रबी फसलों में खरपतवार प्रबन्धन	डा0 अजय प्रभाकर, वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	रबी फसलों के प्रमुख रोग एवं प्रबन्धन	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	रबी फसलों के प्रमुख कीट एवं प्रबन्धन	डा0 ए0के0 पाण्डे, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.8 बाजार आधारित प्रसार : संस्थान द्वारा 'बाजार आधारित प्रसार' प्रशिक्षण का आयोजन अक्टूबर 23–25, 2024 तक किया गया। उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कहा कि आधुनिक कृषि में बाजार के मांग के अनुसार खेती करना परम आवश्यक है। मशरूम, सब्जी मटर, दलहन, जैविक खेती इत्यादि को बाजार से जोड़ते हुए किसान अपना आर्थिक सषक्तिकरण कर सकते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने उपस्थित अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि किसान ऑनलाईन विपणन प्लेटफार्म का प्रयोग करते हुए घर बैठे अपने उत्पादों का विक्रय कर सकते हैं और यही समय की मांग है। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा बाजार आधारित प्रसार–परिचय एवं वर्तमान परिदृश्य में महत्व, मूल्यवर्धित उत्पादों का विपणन– समस्या एवं समाधान, बेमौसमी सब्जी उत्पादन में बाजार आधारित प्रसार का महत्व, बाजार सूचना तंत्र एवं उत्पाद विपणन, विभिन्न फल–सब्जियों का मूल्यवर्धन, लम्बे समय तक रखरखाव एवं माँग आधारित प्रबन्धन, कुक्कुट पालन में बाजार आधारित प्रसार का महत्व, दुग्ध उत्पादों में बाजार आधारित मूल्यवर्धन, हस्तशिल्प उत्पादों का बढ़ता बाजार, दुग्ध उत्पादन एवं बाजार प्रबन्धन, कृषि विपणन में एगमार्क एवं ई–नाम की भूमिका एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती एवं मूल्यवर्धन इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–पौड़ी गढ़वाल, ऊधम सिंह नगर एवं नैनीताल के कुल 18 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए प्रशिक्षणार्थी

समय	विवरण	वार्ताकार
	अक्टूबर 23, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	बाजार आधारित प्रसार–परिचय एवं वर्तमान परिदृश्य में महत्व	डा0 अर्पिता शर्मा काण्डपाल, सह प्राध्यापक, कृषि संचार विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मूल्यवर्धित उत्पादों का विपणन–समस्या एवं समाधान	डा0 रूचि गंगवार, सहा0 प्राध्यापक कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	बेमौसमी सब्जी उत्पादन में बाजार आधारित प्रसार का महत्व	डा0 एस0के0 मौर्या, सहायक प्राध्यापक सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	बाजार सूचना तंत्र एवं उत्पाद विपणन	डा0 स्नेहा दौहरे, सहा0 प्राध्यापक कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय
	अक्टूबर 24, 2024	
10.00–11.15	विभिन्न फल–सब्जियों का मूल्यवर्धन, लम्बे समय तक रखरखाव एवं माँग आधारित प्रबन्धन	डा0 प्रतिभा सिंह, प्राध्यापक (गृह विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	कुक्कुट पालन में बाजार आधारित प्रसार का महत्व	डा0 रिपुसूदन कुमार, सह निदेशक शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	दुग्ध उत्पादों में बाजार आधारित मूल्यवर्धन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	हस्तशिल्प उत्पादों का बढ़ता बाजार	डा0 सुधा जुकारिया, प्राध्यापक (गृह विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट
	अक्टूबर 25, 2024	
10.00–11.15	दुग्ध उत्पादन एवं बाजार प्रबन्धन	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	कृषि विपणन में एगमार्क एवं ई–नाम की भूमिका	डा0 चन्द्रदेव, सह प्राध्यापक कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती एवं मूल्यवर्धन	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.9 ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग : संस्थान द्वारा 'ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग' प्रशिक्षण का आयोजन नवम्बर 20–23, 2024 तक किया गया। उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कहा कि स्वयं सहायता समूह व कृषक उत्पादक संगठन कुटीर उद्योग द्वारा ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वर्तमान में जैम, जैली, मंडुवे का आटा एवं बिस्किट, मौन पालन, हस्तशिल्प जैसे उद्यम अपनाकर किसान साथी अपनी आजीविका संर्वधन कर सकते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने उपस्थित अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। इस अवसर पर आपने कहा कि अनेक कुटीर उद्योग जैसे हस्तशिल्प एवं ऐपण कला, मसालें, मोमबत्ती इत्यादि द्वारा स्वरोजगार चुनकर आत्मनिर्भर हो सकते हैं। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा कुटीर उद्योग– परिचय एवं खाद्य परिरक्षणः स्वरोजगार हेतु प्रभावी विकल्प, औद्यानिकी के क्षेत्र में कुटीर उद्योग के लिए प्रसंस्करण तकनीक, मसाला उत्पादन से रोजगार, हस्तशिल्प द्वारा रोजगार एवं सतत् विकास की राह, महिलाओं के लिए उपयोगी कृषि यंत्र एवं उनसे अतिरिक्त आय सृजन के अवसर, मुर्गे का अचार– दुग्ध उत्पादों के मूल्यवर्धन से रोजगार सृजन, मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती एवं मूल्यवर्धन, मत्स्य पालन– परिचय एवं मत्स्य प्रसंस्करण से आय संवर्धन, मोटे अनाजो का महत्व/मूल्यवर्धन, प्रयोग एवं बेकरी उत्पाद, सोयाबीन प्रसंस्करण तकनीक, सोया पनीर, ओकारा एवं सोयाबीन के पौश्टिक एवं स्वादिश्ट व्यंजन, एपण कला एवं कुटीर स्तर पर मोमबत्ती बनाने की विधियाँ, फल एवं सब्जियों का लम्बे समय तक रखरखाव तथा डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों की जानकारी, औद्यानिक फसलों की कटाई के उपरान्त प्रबन्धन से आय अर्जन एवं कुटीर उद्योग– विपणन प्रबन्धन इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई एवं प्रयोगात्मक कार्य कराये गये। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–नैनीताल, ऊधम सिंह नगर एवं अल्मोड़ा के कुल 21 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों द्वारा बनाया गया मंडुवा केक स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग पर व्यावहारिक प्रशिक्षण

समय	विवरण	वार्ताकार
	नवम्बर 20, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	कुटीर उद्योग– परिचय एवं खाद्य परिरक्षण: स्वरोजगार हेतु प्रभावी विकल्प	डा0 नीतू डोभाल, सह प्राध्यापक गृह विज्ञान महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	औद्यानिकी के क्षेत्र में कुटीर उद्योग के लिए प्रसंस्करण तकनीक	डा0 श्वेता राय, सह प्राध्यापक खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	मसाला उत्पादन से रोजगार	डा0 अनुराधा दत्ता, प्राध्यापक खाद्य एवं पोषण, गृह विज्ञान महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	हस्तशिल्प द्वारा रोजगार एवं सतत् विकास की राह (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 शैफाली मैसी, सह प्राध्यापक टेक्सटाइल एवं परिधान डिजाईनिंग विभाग, गृह विज्ञान महाविद्यालय
	नवम्बर 21, 2024	
10.00–11.15	महिलाओं के लिए उपयोगी कृषि यंत्र एवं उनसे अतिरिक्त आय सृजन के अवसर (कस्टम हॉयरिंग सेन्टर)	डा0 टी0पी0 सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष कृषि यंत्र एवं शक्ति अभियंत्रण विभाग, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मुर्गे का अचार– दुग्ध उत्पादों के मूल्यवर्धन से रोजगार सृजन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती एवं मूल्यवर्धन	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	मत्स्य पालन– परिचय एवं मत्स्य प्रसंस्करण से आय संवर्धन	डा0 एस0के0 शर्मा, प्राध्यापक कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
	नवम्बर 22, 2024	
10.00–11.15	मोटे अनाजो का महत्व/मूल्यवर्धन, प्रयोग एवं बेकरी उत्पाद (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 प्रतिभा सिंह, प्राध्यापक गृह विज्ञान कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	सोयाबीन प्रसंस्करण तकनीक, सोया पनीर, ओकारा एवं सोयाबीन के पौष्टिक एवं स्वादिष्ट व्यंजन (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 प्रतिभा सिंह, प्राध्यापक गृह विज्ञान कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	

14.30–16.00	एपण कला एवं कुटीर स्तर पर मोमबत्ती बनाने की विधियाँ (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 सुधा जुकारिया, प्राध्यापक (गृह विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट
16.00–17.30	शोध केन्द्रों का भ्रमण	
नवम्बर 23, 2024		
10.00–11.15	फल एवं सब्जियों का लम्बे समय तक रखरखाव तथा डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों की जानकारी	डा0 सिमरन कौर अरोरा, सह प्राध्यापक खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	औद्यानिक फसलों की कटाई के उपरान्त प्रबन्धन से आय अर्जन	डा0 पी0के0 ओमरे, प्राध्यापक पोस्ट हार्वेस्ट, प्रोसेस एण्ड फूड इंजीनियरिंग विभाग, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	कुटीर उद्योग– विपणन प्रबन्धन	डा0 स्नेहा दोहरे, सहा0 प्राध्यापक कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.10 मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम : संस्थान द्वारा 'मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम' प्रशिक्षण का आयोजन नवम्बर 28–दिसम्बर 01, 2024 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने उपस्थित कृषकों से कहा कि वे मौन पालन अपनाकर एक सशक्त रोजगार का माध्यम बना सकते हैं। आपने पर्वतीय क्षेत्रों में होने वाली मधुमक्खियों के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि इनसे बने षहद की बाजार में निरन्तर कई गुना मांग बढ़ रही है। आपने विशेष रूप से षहद के पैकेजिंग व ब्रांडिंग कर खुले बाजार व ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का प्रयोग करते हुए विक्रय का सलाह दिया। समेटी समन्वयक डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) ने प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने यह भी कहा कि आने वाले समय में उत्तराखण्ड षहद के क्षेत्र में बहुत बड़ा हब बनने जा रहा है। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के कीट रोग विज्ञान विभाग से जुड़े

मधुमक्खी पालन शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र में भ्रमण

वैज्ञानिकों द्वारा आधुनिक मौन पालन एवं भविष्य में विकास की सम्भावनाएं, मधुमक्खियों का जीवन चक्र, मौनचर एवं कीटनाशी, मौनचर एवं मौनालय स्थानान्तरण व प्रबन्धन, जैविक मौन पालन प्रबन्धन, पर्वतीय क्षेत्रों में परम्परागत रूप से पल रही मौनों का संवर्धन, मधुमक्खी पालन से सम्बन्धित प्रमुख उपकरण एवं प्रयोग विधि, मौन वाटिका एवं रानी की ऋतुवार देखभाल, प्रमुख बीमारियां एवं उनका प्रबन्धन, आर्थिक विवेचना जैसे तकनीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र में भ्रमण कराया गया जहाँ उन्हें

मौन पालन सम्बन्धित नवीनतम विकसित तकनीक और विधायें सिखाई गयी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–ऊधम सिंह नगर, रूद्रप्रयाग, अल्मोड़ा, नैनीताल एवं पौड़ी गढ़वाल के 27 प्रसार कार्यकर्ता एवं कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
	नवम्बर 28, 2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जे0पी0 जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	आधुनिक मौन पालन एवं भविष्य में विकास की सम्भावनाएं	डा0 जे0पी0 पुरवार, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मधुमक्खियों का जीवन चक्र	डा0 रेनू पाण्डे, सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	मौनचर एवं कीटनाशी	डा0 रवि प्रकाश मौर्या, सह प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	फसलों में परागण एवं उनका महत्व (प्रयोगात्मक–मौन पालन शोध केन्द्र भ्रमण)	डा0 प्रमोद मल्ल एवं श्री संजय सिंह, प्राध्यापक, कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
	नवम्बर 29, 2024	
10.00–11.15	मौनचर एवं मौनालय स्थानान्तरण एवं प्रबन्धन	डा0 रेनू पाण्डे, सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	जैविक मौन पालन प्रबन्धन	डा0 रूचिरा तिवारी, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	पर्वतीय क्षेत्रों में परम्परागत ढंग से पल रही (*Apis Cerena Indica*) मौनों का संर्वधन	डा0 रेनू पाण्डे, सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	मधुमक्खी पालन के प्रमुख उपकरण एवं उनका प्रयोग (प्रयोगात्मक–मौन पालन शोध केन्द्र भ्रमण)	डा0 प्रमोद मल्ल एवं श्री संजय सिंह, प्राध्यापक, कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
	नवम्बर 30, 2024	
10.00–11.15	मौन वाटिका एवं रानी की ऋतुवार देखभाल	डा0 रेनू पाण्डे, सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मधुमक्खियों में लगने वाली प्रमुख बीमारियों एवं शत्रुओं का प्रबन्धन	डा0 जे0पी0 पुरवार, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–17.30	मौन पालन में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न उपकरण एवं उनका उपयोग (प्रक्षेत्र पर) एवं विश्वविद्यालय की अन्य शोध इकाईयों का भ्रमण	डा0 रेनू पाण्डे, सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

दिसम्बर 01, 2024		
10.00–11.15	मधुमक्खी पालन व्यवसाय की आर्थिक विवेचना	डा0 प्रमोद मल्ल एवं श्री दिलीप, प्राध्यापक, कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती एवं मूल्यवर्धन	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	ट्रीट इकाई का भ्रमण	
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जे0पी0 जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.11 उन्नत मत्स्य पालन तकनीक : संस्थान द्वारा 'उन्नत मत्स्य पालन तकनीक' प्रशिक्षण का आयोजन दिसम्बर 11–14, 2024 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने उपस्थित कृषकों से कहा कि मछली एवं मछलियों के प्रसंस्कृत उत्पादों की मांग न केवल देश में बल्कि वैश्विक स्तर पर बढ़ रही है। इसको दृष्टिगत रखते हुए आपने किसानों से मत्स्य पालन करने का सलाह दिया। साथ ही आपने कहा कि किसी भी प्रकार के समस्या के समाधान हेतु किसान विश्वविद्यालय में सम्पर्क कर सकते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने उपस्थित अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा मत्स्य पालन : एक लाभकारी व्यवसाय एवं आर्थिक विश्लेषण, ठण्डे एवं गर्म जल में मछली पालन, मत्स्य बीज उत्पादन एवं संचय, मत्स्य पालन में प्राकृतिक एवं कृत्रिम आहार व्यवस्था, तालाबों की मिट्टी एवं पानी की गुणवत्ता का प्रबन्धन, मत्स्य रोग एवं निदान, पालने योग्य मछलियां एवं उनकी पहचान, मत्स्य तालाब का निर्माण एवं देखरेख, मत्स्य पालन में विभिन्न प्रकार के जालों का प्रयोग, मत्स्य निकासी एवं विपणन, एक्वेरियम निर्माण एवं रंगीन मछली पालन, समन्वित मत्स्य पालनः लघु कृषकों हेतु आय का साधन, मत्स्य पालन की अभिनव तकनीकें, मत्स्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–ऊधम सिंह नगर, हरिद्वार, पौड़ी गढ़वाल, अल्मोड़ा, नैनीताल एवं देहरादून के कुल 32 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

प्रशिक्षणार्थियों का मत्स्य प्रक्षेत्र पर भ्रमण

समय	विवरण	वार्ताकार
दिसम्बर 11, 2024		
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

10.00–11.15	मत्स्य पालन : एक लाभकारी व्यवसाय एवं आर्थिक विश्लेषण	डा0 आशुतोष मिश्रा, प्राध्यापक जलीय पर्यावरण प्रबन्धन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	ठण्डे एवं गर्म जल में मछली पालन	डा0 अनूप कुमार, प्राध्यापक मत्स्य प्रग्रहण एवं परिसंस्करण विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	मत्स्य बीज उत्पादन एवं संचय	डा0 एस0के0 शर्मा, प्राध्यापक (मत्स्य पालन) कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	मत्स्य पालन में प्राकृतिक एवं कृत्रिम आहार व्यवस्था	डा0 अकांक्षा खाती, सह प्राध्यापक जल जीव पालन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
	दिसम्बर 12, 2024	
10.00–11.15	तालाबों की मिट्टी एवं पानी की गुणवत्ता का प्रबन्धन	डा0 आशुतोष मिश्रा, प्राध्यापक जलीय पर्यावरण प्रबन्धन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मत्स्य रोग एवं निदान	डा0 अवधेश कुमार, प्राध्यापक एवं अधिष्ठाता जल जीव पालन विभाग
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	पालने योग्य मछलियां एवं उनकी पहचान (प्रायोगिक–मत्स्य प्रक्षेत्र पर)	डा0 राजेश, प्राध्यापक जल जीव पालन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	मत्स्य तालाब का निर्माण एवं देखरेख	डा0 राजेश, प्राध्यापक
	(प्रायोगिक–मत्स्य प्रक्षेत्र पर)	जल जीव पालन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
	दिसम्बर 13, 2024	
10.00–11.15	मत्स्य पालन में विभिन्न प्रकार के जालों का प्रयोग, मत्स्य निकासी एवं विपणन	डा0 अनूप कुमार, प्राध्यापक मत्स्य प्रग्रहण एवं परिसंस्करण विभाग
11.15–11.30		
11.30–13.00	एक्वेरियम निर्माण एवं रंगीन मछली पालन	डा0 अवधेश कुमार, प्राध्यापक एवं अधिष्ठाता मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	समन्वित मत्स्य पालनः लघु कृषकों हेतु आय का साधन	डा0 वी0के0 सिंह, प्राध्यापक (मत्स्य पालन) कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	मत्स्य पालन की अभिनव तकनीकें	डा0 वी0के0 सिंह, प्राध्यापक (मत्स्य पालन) कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

दिसम्बर 14, 2024		
10.00–11.15	मत्स्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन	डा0 विपुल गुप्ता, प्राध्यापक मत्स्य प्रग्रहण एवं परिसंस्करण विभाग
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	ट्रीट इकाई का भ्रमण	
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.12 उन्नत बकरी पालन : संस्थान द्वारा 'उन्नत बकरी पालन' प्रशिक्षण का आयोजन दिसम्बर 18–20, 2024 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने उपस्थित कृषकों से कहा कि वर्तमान में बकरी के ऐसे–ऐसे उन्नत नस्ल विकसित हुए है, जिनका पालन कर किसान कम समय में अधिक आय अर्जित कर सकते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने उपस्थित अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा बकरियों की विभिन्न प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन, बकरियों में आहार प्रबन्धन, बकरियों में आवास प्रबन्धन, बकरियों में प्रजनन प्रबन्धन, बकरी उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, बकरियों पालन का आर्थिक लेखा–जोखा एवं क्रय–विक्रय, बकरियों के प्रमुख रोग एवं टीकाकरण, बकरियों में परजीवी रोग एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के बकरी इकाई एवं अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण भी कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–ऊधम सिंह नगर, पौड़ी गढ़वाल, अल्मोड़ा, नैनीताल एवं हरिद्वार के कुल 31 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
दिसम्बर 11, 2024		
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	बकरियों की विभिन्न प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	बकरियों में आहार प्रबन्धन	डा0 रिपुसूदन कुमार, सह निदेशक शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला

13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	बकरियों में आवास प्रबन्धन	डा0 संजय चौधरी, प्राध्यापक (पशुपालन)
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	बकरी इकाई का भ्रमण (पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग)	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
	दिसम्बर 19, 2024	
10.00–11.15	बकरियों में प्रजनन प्रबन्धन	डा0 सुनील कुमार, सहा0 प्राध्यापक पशु मादा रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	बकरी उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–15.30	बकरियों पालन का आर्थिक लेखा–जोखा एवं क्रय–विक्रय	डा0 एस0के0 सिंह, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग पशुचिकित्सा महाविद्यालय
15.30–17.30	ट्रीट एवं अन्य इकाईयों का भ्रमण	
	दिसम्बर 20, 2024	
10.00–11.15	बकरियों के प्रमुख रोग एवं टीकाकरण	डा0 निधि अरोरा, प्राध्यापक पशु औषधि विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	बकरियों में परजीवी रोग	डा0 राजीव रंजन, सह प्राध्यापक पशु परजीवी विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय
13.00–14.30	भोजनावकाश	
14.30–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
16.00–17.00	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.13 व्यावसायिक मशरूम उत्पादन : संस्थान द्वारा 'व्यावसायिक मशरूम उत्पादन' प्रशिक्षण का आयोजन जनवरी 15–18, 2025 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने उपस्थित कृषकों से कहा कि मशरूम उत्पादन एक ऐसा उद्यम है, जो बहुत कम जगह में प्रारम्भ किया जा सकता है और इस व्यवसाय से आय में निरन्तरता बनी रहती है। पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ

प्रशिक्षणार्थियों का मशरूम अनुसंधान केन्द्र पर भ्रमण

बंदर व अन्य जंगली जानवरों से फसल को क्षति होती है, किसान इस उद्यम को अपनाकर स्वरोजगार का मार्ग प्रषस्त कर सकते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने कहा कि निश्चित रूप से आने वाला समय मशरूम का है और किसान इस उद्यम को अपनाकर स्वरोजगार की राह पर आगे बढ़ सकते हैं। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा मशरूम की प्रमुख प्रजातियां तथा उत्पादन की स्थिति, मशरूम गृह का आकार–प्रकार एवं वायु संचार व्यवस्था, ढीगरी एवं दूधिया मशरूम की वैज्ञानिक खेती, माध्यम की तैयारी एवं रखरखाव, मशरूम कल्चर, मास्टर स्पान एवं व्यावसायिक स्पान, शुद्ध एवं संक्रमित स्पान की पहचान तथा स्पान क्रय एवं परिवहन में सावधानियाँ, खाद्य, अखाद्य तथा औषधीय मशरूम की पहचान एवं गुणवत्ता, बटन मशरूम के कम्पोस्ट एवं आवरण मृदा बनाने की विधियां एवं उपयोग, बिजाई एवं फसल प्रबन्धन, कम्पोस्ट एवं आवरण मृदा बनाना, ढिंगरी एवं दूधिया मशरूम का माध्यम तैयार करना, बीजाई एवं बैग तैयार करना, मशरूम उत्पादकों को सशक्त बनाने में सोषल मीडिया की प्रभावशीलता, मशरूम में लगने वाले प्रमुख कीट, निमेटोड एवं रोगों की पहचान व रोकथाम, ऋशि मशरूम की खेती की विधि, मशरूम उत्पादन का आर्थिक विश्लेषण एवं विपणन व्यवस्था, मशरूम की चुनाई उपरान्त प्रौद्यौगिकी/मूल्यवर्धन, मानक, पैकिंग, भण्डारण एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के बकरी इकाई एवं अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण भी कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–अल्मोड़ा, पौड़ी गढ़वाल, नैनीताल एवं ऊधम सिंह नगर के कुल 33 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
जनवरी 15, 2025		
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	मशरूम की प्रमुख प्रजातियां तथा उत्पादन की स्थिति	डा0 एस0के0 मिश्रा, संयुक्त निदेशक मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मशरूम गृह का आकार–प्रकार एवं वायु संचार व्यवस्था	डा0 एस0के0 मिश्रा, संयुक्त निदेशक मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	ढीगरी एवं दूधिया मशरूम की वैज्ञानिक खेती, माध्यम की तैयारी एवं रखरखाव	डा0 के0पी0एस0 कुशवाहा, प्राध्यापक पादप रोग विज्ञान, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	मशरूम कल्चर, मास्टर स्पान एवं व्यावसायिक स्पान, शुद्ध एवं संक्रमित स्पान की पहचान तथा स्पान क्रय एवं परिवहन में सावधानियाँ	डा0 शिल्पी रावत, सहायक प्राध्यापक पादप रोग विज्ञान, कृषि महाविद्यालय

	जनवरी 16, 2025	
10.00–11.15	खाद्य, अखाद्य तथा औषधीय मशरूम की पहचान एवं गुणवत्ता	डा0 शिल्पी रावत, सहायक प्राध्यापक पादप रोग विज्ञान, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	बटन मशरूम के कम्पोस्ट एवं आवरण मृदा बनाने की विधियां एवं उपयोग, बिजाई एवं फसल प्रबन्धन	डा0 एस0के0 मिश्रा, संयुक्त निदेशक मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	कम्पोस्ट एवं आवरण मृदा बनाना (प्रयोगात्मक कार्य–मशरूम अनुसंधान केन्द्र)	श्री सर्वेश कुमार, मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	ढिंगरी एवं दूधिया मशरूम का माध्यम तैयार करना, बीजाई एवं बैग तैयार करना (प्रयोगात्मक कार्य–मशरूम अनुसंधान केन्द्र)	श्री सर्वेश कुमार, मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर
	जनवरी 17, 2025	
10.00–11.15	मशरूम उत्पादकों को सशक्त बनाने में सोशल मीडिया की प्रभावशीलता	डा0 अर्पिता शर्मा काण्डपाल, सहायक प्राध्यापक, कृषि संचार विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मशरूम में लगने वाले प्रमुख कीट, निमेटोड एवं रोगों की पहचान व रोकथाम	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक, पादप रोग प्रसार शिक्षा निदेशालय, पंतनगर
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–17.30	ऋषि मशरूम की खेती की विधि	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक, पादप रोग प्रसार शिक्षा निदेशालय, पंतनगर
	जनवरी 18, 2025	
10.00–11.15	मशरूम उत्पादन का आर्थिक विश्लेषण एवं विपणन व्यवस्था	डा0 एस0के0 श्रीवास्तव, प्राध्यापक कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	मशरूम की चुनाई उपरान्त प्रौद्यौगिकी/मूल्यवर्धन, मानक, पैकिंग, भण्डारण	डा0 ओमवीर सिंह, प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.14 डिजिटल कृषि : संस्थान द्वारा 'डिजिटल कृषि' प्रशिक्षण का आयोजन फरवरी 06–08, 2025 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्‌घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने उपस्थित कृषकों से कहा कि डिजिटल कृषि भविष्य की कृषि साबित होगी। आज समय की मांग है कि डिजिटल कृषि का हम ज्यादा से ज्यादा अपने खेती में प्रयोग करें। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने उपस्थित अतिथियों तथा

प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ कहा कि भारत सरकार डिजिटल कृषि का खेती में प्रयोग करने पर अनुदान दे रही है। अतः हम सभी को इसका लाभ लेना चाहिए। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा मौसम पूर्वानुमान तथा रिमोट सेसिंग आधारित तकनीक का आधुनिक कृषि में उपयोग, कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार तथा डिजिटल कृषि का उपयोग, ड्रोन द्वारा उर्वरक एवं कीटनाशी रसायनों का छिड़काव, कृषि में परिशुद्ध सिंचाई तथा उर्वरक हेतु प्रबन्धन, संसर्स एवं IOT (Internet of Things) के उपयोग द्वारा भूमि एवं वातावरण की जानकारी, डिजिटल कृषि सम्बन्धी सरकारी योजनायें एवं कम्प्यूटर तकनीक के उपयोग से फसलों में लगने वाली बीमारियों की जानकारी एवं सलाह, परिशुद्ध सिंचाई एवं शेषक तत्वों का प्रबन्धन, स्मार्ट कृषि के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ, प्रमुख औद्यानिकी फसलें–उत्पादन तकनीक एवं आधुनिक विपणन विधियाँ, डिजिटल कृषि और विपणन की

डिजिटल कृषि की जानकारी देते हुए वैज्ञानिक

सम्भावनाएं एवं बदलते मौसम में मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती– आर्थिकी उन्नयन का सशक्त माध्यम इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के कृषक भवन–प्रदर्शन इकाई एवं अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण भी कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–अल्मोड़ा, देहरादून एवं ऊधम सिंह नगर के कुल 10 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
	फरवरी 06, 2025	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	मौसम पूर्वानुमान तथा रिमोट सेसिंग आधारित तकनीक का आधुनिक कृषि में उपयोग	डा0 राजीव रंजन, सहा0 प्राध्यापक कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार तथा डिजिटल कृषि का उपयोग	डा0 पारस, प्राध्यापक इलैक्ट्रानिक एवं संचार अभियांत्रिकी
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	ड्रोन द्वारा उर्वरक एवं कीटनाशी रसायनों का छिड़काव	डा0 अजय कुमार श्रीवास्तव, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	कृषि में परिशुद्ध सिंचाई तथा उर्वरक हेतु प्रबन्धन	डा0 पी0के0 सिंह, प्राध्यापक सिंचाई एवं जल निकास अभियांत्रिकी प्रौद्योगिकी महाविद्यालय

फरवरी 07, 2025		
10.00–11.15	संसर्स एवं IOT (Internet of Things) के उपयोग द्वारा भूमि एवं वातावरण की जानकारी	डा0 राजीव सिंह, प्राध्यापक कम्प्यूटर इंजीनियरिंग
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	डिजिटल कृषि सम्बन्धी सरकारी योजनायें एवं कम्प्यूटर तकनीक के उपयोग से फसलों में लगने वाली बीमारियों की जानकारी एवं सलाह	डा0 एस0डी0 सामंत्रे प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष कम्प्यूटर इंजीनियरिंग
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	परिशुद्ध सिंचाई एवं पोषक तत्वों का प्रबन्धन (प्रक्षेत्र भ्रमण)	डा0 धीरज कुमार, सह प्राध्यापक सिंचाई एवं जल निकास अभियांत्रिकी प्रौद्योगिकी महाविद्यालय
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	स्मार्ट कृषि के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ (प्रक्षेत्र भ्रमण)	डा0 श्रीप्रकाश द्विवेदी, सहायक प्राध्यापक सूचना प्रौद्योगिकी
फरवरी 08, 2025		
10.00–11.15	प्रमुख औद्यानिकी फसलें–उत्पादन तकनीक एवं आधुनिक विपणन विधियाँ	डा0 ए0के0 सिंह, संयुक्त निदेशक उद्यान अनुसंधान केन्द्र, पत्थरचट्टा
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	डिजिटल कृषि और विपणन की सम्भावनाएं	डा0 स्नेहा दोहरे, सहा0 प्राध्यापक कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय
13.00–14.00	**भोजनावकाश**	
14.00–15.00	बदलते मौसम में मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती– आर्थिकी उन्नयन का सशक्त माध्यम	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
15.00–16.00	कृषक भवन–प्रदर्शन इकाई का भ्रमण	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
16.00–17.00	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

ब. वित्त पोषित प्रशिक्षण

5.15 बकरी पालन–एक लाभकारी व्यवसाय : समेटी–उत्तराखण्ड (प्रसार शिक्षा निदेशालय), गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर एवं राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबन्ध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद के संयुक्त तत्वाधान में ''बकरी पालन–एक लाभकारी व्यवसाय'' विषयक तीन दिवसीयॅ वर्चुअल प्रशिक्षण दिनांक जून 20–22, 2024 को प्रारम्भ किया गया।

वर्चुअल प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा ने कहा कि आय सृजन हेतु बकरी पालन व्यवसाय विशेष रूप से लघु एवं सीमान्त कृषकों के लिए वरदान साबित हो सकता है। इस व्यवसाय से कृषक बहुत कम समय में अपनी आय में कई गुना वृद्धि कर सकते हैं। आपने कहा कि फसल उत्पादन के साथ–साथ बकरी पालन कृषकों हेतु लाभकारी उद्यम हो सकता है। डा0 षाहजी फण्ड, वरिश्ठ वैज्ञानिक, मैनेज हैदराबाद एग्री क्लीनिक व एग्री बिजनेस सेन्टर सहित संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा अतिथियों के स्वागत सहित ऑनलाइन प्रशिक्षण की विस्तृत रूपरेखा एवं मैनेज के समन्वयन से संचालित होने वाले विभिन्न कार्यक्रम के बारे में प्रतिभागियों को

:बकरी पालन पर ऑनलाइन प्रशिक्षण

जानकारी दी। प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय तथा मैनेज के वैज्ञानिकों द्वारा बकरियों की उन्नत नस्ल, आवास एवं खानपान व्यवस्था, बकरी के बच्चों की समुचित देखभाल, प्रजनन, बकरी के दूध एवं मांस के मूल्यवर्धित उत्पाद, बकरियों के प्रमुख रोग एवं निदान, बकरी पालन सम्बन्धी सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस वर्चुअल प्रशिक्षण में उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पष्चिम बंगाल, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र इत्यादि राज्यों से लगभग 56 प्रतिभागी भाग लिये। प्रतिभागियों में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक, पशुपालन विभाग एवं आतमा के अधिकारी, उद्यमी, स्टार्टअप के प्रतिनिधि, स्वंय सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि, प्रगतिशील कृषक थे।

S.No.	Date	Time	Topic	Expert Speaker and Designation
Day 1: 20-06-2024				
	20-06-2024	9.30am-9.45am	**Inauguration**	
1.	20-06-2024	9.45 - 11.00 AM	Goat farming- An Overview and various breeds of goat	Dr. R.K. Sharma, Professor & Head, LPM, College of Veterinary & Animal Sciences, GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9412121081, 9837637244, 9412557576
2.	20-06-2024	11.00 - 12.15 PM	Housing Management of goats	Dr. S.K. Singh, Prof., LPM College of Veterinary & Animal Sciences, GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9411320143
3.	20-06-2024	12.15 - 1.30 PM	Feeding Management in goats	Dr. Jyoti Plod, Prof. LPM College of Veterinary & Animal Sciences, GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9412125050

Day 2: 21-06-2024				
4.	21-06-2024	9.45 - 11.00 AM	Reproduction Management in goats	Dr. Sunil Kumar, Asstt. Prof., Veterinary Gynaecology, College of Veterinary & Animal Sciences, GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9412941999
5.	21-06-2024	11.00 - 12.15PM	Management of kids	Dr. Sanjay Chaudhary, Professor (Ani. Hus.), DEE GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9412162673
6.	21-06-2024	12.15 - 1.30 PM	Value addition of goat milk	Dr. Anita, Asstt. Prof. LPM, College of Veterinary & Animal Sciences, GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9411159836
Day 3: 22-06-2024				
7.	22-06-2024	9.45 - 11.00 AM	Important Diseases of goats	Dr. Nidhi Arora, Professor (Veterinary Medicine), College of Veterinary & Animal Sciences, GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 8449226891
8.	22-06-2024	11.00 - 12.15 PM	Overview of AC and ABC Scheme	Dr. Shahji Sambhaji Phand, Dy. Director (Allied Extension), MANAGE
9.	22-06-2024	12.15 - 1.30 PM	Different government schemes related to goat farming	Dr. Sushrirekha Das MANAGE Fellow
10.	22-06-2024	2.30 - 3.30 PM	Production Technology of Millets	Dr. B.D. Singh Professor (Agronomy) Directorate of Extension Education, GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9412952034
Lunch break				
11.	22-06-2024	3.30 - 4.00 PM	Post evaluation Test	
12.	22-06-2024	4.00 - 4.30 PM	Concluding Remarks	

5.16 जैविक खेती : समेटी–उत्तराखण्ड एवं जिला प्रशासन, बीजापुर (छत्तीसगढ़) द्वारा बीजापुर जनपद जो नक्सलवाद से प्रभावित प्रमुख क्षेत्रों में से एक है, की ग्रामीण महिलाओं हेतु संस्थान द्वारा 'जैविक खेती' प्रशिक्षण का आयोजन अगस्त 06–11, 2024 तक किया गया। जिला प्रशासन, बीजापुर से आये अधिकारियों के अनुसार प्रशिक्षण का उद्देश्य नक्सलवाद से प्रभावित ग्रामीण महिलाओं को जैविक कृषि से जोड़कर उनके आय में वृद्धि करना है। कार्यक्रम के उद्घाटन दिनांक 06 अगस्त, 2024 के अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कहा कि आज जैविक उत्पाद की देश सहित विदेशों में भारी मांग है। ये ग्रामीण महिलाएं कृषक

प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते निदेशक प्रसार शिक्षा

उत्पादक संगठन का गठन कर जैविक उत्पादों का विपणन करते हुए अपनी आजीविका संवर्धन कर सकती हैं। विशेष रूप से आपने जैविक विधि से सब्जियों की खेती, समन्वित कृषि प्रणाली एवं पशुपालन कर मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार एवं

आय बढ़ाने का सलाह दिया। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) ने प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ कहा कि यदि हमें अपना स्वास्थ्य ठीक रखना है तो निश्चित रूप से जैविक खेती को अपनाते हुए स्वस्थ कृषि स्वस्थ मानव के सिद्धांत पर आगे बढ़ना होगा। आपने बताया कि इस प्रशिक्षण में जैविक खेती– परिचय, सिद्धान्त एवं लाभ, जैविक कृषि के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाले विभिन्न कृषि निवेशों का विवरण, जैविक विधि से फसलो की उन्नत खेती, सब्जियों की जैविक विधि से खेती विशेषतः पॉली हाउस में जैविक टमाटर, शिमला मिर्च एवं खीरा उत्पादन तकनीक, पॉली हाउस की संरचना एवं सूक्ष्म सिंचाई तकनीक का प्रयोग, जैविक कृषि के अन्तर्गत शेषक तत्व प्रबन्धन, जैविक विधि से कीट रोग नियंत्रण, जैविक सब्जी उत्पादन में जैव नियंत्रकों का महत्व, जैविक विधि से उत्पादित दुग्ध उत्पादों का मूल्यवर्धन एवं जैविक फसलों के प्रमाणीकरण की विधियाँ एवं प्रमाणीकरण से होने वाले लाभ जैसे विषयों पर व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों को फसल अनुसंधान केन्द्र, उद्यान अनुसंधान केन्द्र, मत्स्य, शैक्षणिक डेयरी फार्म, नगला, मशरूम अनुसंधान केन्द्र इत्यादि का भ्रमण कराया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिव्या नेगी, पब्लिक पॉलिसी अधिकारी, श्री निखिल महापात्रा, जिला परियोजना प्रबन्धक, श्री कृश्णा कुमार, सहायक निदेशक कृषि, बीजापुर व श्री संजय मालाकर, आतमा अधिकारी सहित 12 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
	प्रथम दिवस–06.08.2024	
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.15	जैविक खेती– परिचय, सिद्धान्त एवं लाभ	डा0 धनंजय कुमार सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	जैविक कृषि के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाले विभिन्न कृषि निवेशों का विवरण	डा0 एस0के0 यादव, सह प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	जैविक विधि से धान की उन्नत खेती	डा0 अजय प्रभाकर, वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.30	सब्जियों की जैविक विधि से खेती विशेषतः पॉली हाउस में जैविक टमाटर, शिमला मिर्च एवं खीरा उत्पादन तकनीक	डा0 अनिल चन्द्रा, सब्जी वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
	द्वितीय दिवस–07.08.2024	
10.00–11.15	पॉली हाउस की संरचना एवं सूक्ष्म सिंचाई तकनीक का प्रयोग	डा0 पी0के0 सिंह, प्राध्यापक सिंचाई एवं जल निकास, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	जैविक कृषि के अन्तर्गत पोषक तत्व प्रबन्धन	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय

13.00–14.30	**चाय**	
14.30–16.00	जैविक उत्पादन प्रखण्ड एवं फसल अनुसंधान केन्द्र के अन्य इकाईयों का भ्रमण	डा0 एस0के0 यादव, सह प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग
	तृतीय दिवस–08.08.2024	
10.00–11.15	जैविक विधि से कीट रोग नियंत्रण एवं जैविक कीट नियंत्रण प्रयोगशाला का भ्रमण	डा0 आर0पी0 मौर्या, सह प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	जैविक सब्जी उत्पादन हेतु न्यूनतम साझा कार्यक्रम तथा जैविक नियत्रंण प्रयोगशाला का भ्रमण	डा0 रूपाली शर्मा, प्राध्यापक (जैविक नियंत्रण) पादप रोग विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	कृषक स्तर पर जैविक कृषि की सम्भावनायें व विस्तार	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
	चतुर्थ दिवस–09.08.2024	
10.00–11.15	जैविक विधि से उत्पादित दुग्ध उत्पादों का मूल्यवर्धन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	आधुनिक मौन पालन तकनीक	डा0 प्रमोद मल्ल, विभागाध्यक्ष एवं संयुक्त निदेशक, मौन पालन अनुसंधान केन्द्र
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	उद्यान अनुसंधान केन्द्र, पत्थरचट्टा का भ्रमण	डा0 ए0के0 सिंह, प्राध्यापक एवं संयुक्त निदेशक, उद्यान विज्ञान विभाग कृषि महाविद्यालय
	पंचम दिवस–10.08.2024	
10.00–11.15	जैविक फसलों के प्रमाणीकरण की विधियाँ एवं प्रमाणीकरण से होने वाले लाभ	डा0 धनंजय कुमार सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	प्राकृतिक खेती	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	ट्रीट इकाई का भ्रमण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय
	षष्ठम दिवस–11.08.2024	
10.00–11.15	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय
11.15–11.30	**चाय**	
11.30–13.00	बैकयार्ड कुक्कुट पालन	डा0 अनिल सैनी, प्राध्यापक (पशुपालन) कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
13.00–14.30	**भोजनावकाश**	
14.30–16.00	हस्तशिल्प द्वारा रोजगार एवं सतत् विकास की राह	डा0 प्रतिभा सिंह, सह निदेशक (गृह विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.17 विकसित उन्नत कृषि तकनीक : समेटी–उत्तराखण्ड, प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो. ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा 'विकसित उन्नत कृषि तकनीक' पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन दिसम्बर 10, 2024 को किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 20 विभागीय अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम, देहरादून के सहयोग से आयोजित किया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
	दिसम्बर 10, 2024	
9.30–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.00	रबी धान्य फसलों की वैज्ञानिक खेती	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं निदेशक प्रसार शिक्षा
11.00–11.10	**चाय**	
11.10–12.00	रबी दलहनी एवं तिलहनी फसलों की उन्नत खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय
12.00–13.00	रबी फसलों में खरपतवार प्रबन्धन	डा0 अजय प्रभाकर, वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर
13.00–14.00	**भोजनावकाश**	
14.00–15.00	संरक्षित खेती	डा0 पी0के0 सिंह, प्राध्यापक सिंचाई एवं जल निकास प्रौद्योगिकी महाविद्यालय
15.00–16.00	औद्यानिक फसलों की वैज्ञानिक खेती	डा0 ए0के0 सिंह, प्राध्यापक उद्यान विभाग
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.15	मशरूम के मूल्यवर्धन से आय सृजन का राह	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक (पादप रोग) प्रसार शिक्षा निदेशालय
17.15–18.00	समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.18 उन्नत मत्स्य पालन तकनीक : समेटी–उत्तराखण्ड, प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो. ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा 'उन्नत मत्स्य पालन तकनीक' पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन दिसम्बर 11, 2024 को किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 20 प्रगतिशील मत्स्य पालकों एवं विभागीय अधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम, देहरादून के सहयोग से आयोजित किया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार
	दिसम्बर 11, 2024	
9.30–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड
10.00–11.00	मत्स्य पालन : एक लाभकारी व्यवसाय एवं आर्थिक विश्लेषण, तालाबों की मिट्टी एवं पानी की गुणवत्ता का प्रबन्धन	डा0 आशुतोष मिश्रा, प्राध्यापक जलीय पर्यावरण प्रबन्धन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय

11.00–11.10	**चाय**	
11.10–12.00	मत्स्य पालन में प्राकृतिक एवं कृत्रिम आहार व्यवस्था	डा0 अकांक्षा खाती, सह प्राध्यापक जल जीव पालन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
12.00–13.00	एक्वेरियम निर्माण, रंगीन मछली पालन तथा मत्स्य रोग एवं निदान	डा0 अवधेश कुमार, प्राध्यापक एवं अधिष्ठाता मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
13.00–14.00	**भोजनावकाश**	
14.00–15.00	मत्स्य तालाब का निर्माण एवं देखरेख (प्रायोगिक–मत्स्य प्रक्षेत्र पर)	डा0 राजेश, प्राध्यापक जल जीव पालन विभाग, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
15.00–16.00	मत्स्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन	डा0 विपुल गुप्ता, प्राध्यापक मत्स्य प्रग्रहण एवं परिसंस्करण विभाग
16.00–16.15	**चाय**	
16.15–17.15	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय
17.15–18.00	समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

5.19 प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण के लिये विस्तार अधिकारियों का क्षमता विकासः समेटी–उत्तराखण्ड (प्रसार शिक्षा निदेशालय) एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी, हरियाणा (भारत सरकार) के संयुक्त तत्वाधान में प्रसार अधिकारियों के क्षमता विकास हेतु ''प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण के लिए विस्तार अधिकारियों का क्षमता विकास'' विषयक प्रशिक्षण– जनवरी 07–10, 2025 को निदेशालय के कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर विश्वविद्यालय के कुलपति डा0 मनमोहन सिंह चौहान ने उपस्थित अधिकारियों से कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीक के प्रचार–प्रसार में आप सभी की महत्वपूर्ण भूमिका है। आपने सलाह दिया कि छोटे–छोटे उद्यम जैसे मोटे अनाजों की खेती, बैकयार्ड मुर्गी पालन, बकरी पालन, मौन पालन, मशरूम उत्पादन, मसालों का प्रसंस्करण अपनाकर किसानों के आय में पर्याप्त बढ़ोत्तरी की जा सकती है। आपने विशेष रूप से कहा कि उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में ज्यादातर लघु एवं मध्यम कृषक हैं, जिनके छोटे–छोटे जोत हैं। अतः

प्रशिक्षण के दौरान कुलपति डा0 मनमोहन सिंह चौहान

इनकी आवश्यकतानुरूप तकनीकी हस्तान्तरण होना चाहिए। निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने प्रतिभागियों से कहा कि आप जैसे अधिकारी विश्वविद्यालय और कृषकों के बीच में पुल की भांति काम करते हैं। आपसे प्राप्त फीडबैक भविष्य के शोध का आधार बनता है। आपने कहा कि उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा अनेक कृषकोपयोगी तकनीक विकसित किये गये हैं, आज आवश्यकता इस बात की है कि आप लोग इन तकनीकों का कृषकों के बीच ज्यादा से ज्यादा प्रचार–प्रसार करने में वैज्ञानिकों की मदद करें। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक एवं समन्वयक,

समेटी ने कुलपति एवं अन्य अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि पर्वतीय पारम्परिक कृषि उत्पादों का विपणन कर कृषक अपनी आजीविका में वृद्धि कर सकते हैं।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय–प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी के संकाय सदस्य डा0 भरत सिंह घणघस ने कहा कि प्रसार अधिकारियों का समय–समय पर प्रशिक्षण होते रहना चाहिए, जिससे इनका क्षमता विकास हो एवं ये विकसित तकनीकों के बारे में अपने–अपने क्षेत्रों में अधिकतम प्रचार–प्रसार कर सकें। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक तथा विभिन्न जनपदों से आतमा के अधिकारियों सहित लगभग 40 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

Time	Date and Topic	Resource Person
Day-1: 07/01/2025 (Tuesday)		
09:30-10:00 AM	Registration and pre-test Prashikshan Kendra, GBPUA&T, Pantnagar	Team EEI and Directorate of Extension Education
10:00-10:30 AM	Inauguration of training programme	Director, SAMETI Course Coordinators & Participants
10:30-11:00 AM	**Refreshment/Tea Break**	
11:00-01:00 PM	Communication skills for enhancing competencies of extension workers	Dr. B.S. Ghanghas Faculty, EEI, Nilokheri
01:00-02:00 PM	**Lunch break**	
02:00-03:00 PM	Role of agri start-up in entrepreneurship development	Dr. R.M. Srivastava Professor (Entomology)
03:00-03:10 PM	**Tea Break**	
03:10-04:15 PM	Leadership development and team building skills to enhance performance of extension functionaries	Dr. S.K. Kashyap, Professor (Agril. Extn. & Comm.) and Dean Agriculture
04:15-05:30 PM	Participatory extension approaches to farmer for transfer of technologies and role of Krishi Vigyan Kendra in livelihood support of farming community	Dr. Jitendra Kwatra, Professor (Agronomy) & Director Extension Education
Day-2: 08/01/2025 (Wednesday)		
09:30-10:00 AM	Recall Session	Dr. B.S. Ghanghas Faculty, EEI, Nilokheri
10:00-11:30 AM	Harnessing potential of the social media for greater outreach and real time information	Dr. Arpita Sharma Kandpal, Assoc. Professor (Agril. Extn. & Comm.)
11:30-11:45 AM	**Tea Break**	
11:45-01:00 PM	Recent information and communication technologies for transfer of climate smart technologies	Dr. B.S. Ghanghas Faculty, EEI, Nilokheri
01:00-02:00 PM	**Lunch Break**	

02:00-03:15 PM	Participatory technology development for situational extension/ farming situation-based extension	Dr. Kiran Rana, Asstt. Professor (Agril. Extn. & Comm.)
03:15-03:20 PM	**Tea Break**	
03.20-04.30 PM	Visit of instructional dairy farm	Dr. S.K. Singh, Professor & Jt. Director
04:30-05:30 PM	Visit of instructional poultry farm	Dr. Ripusudan Kumar, Assoc. Director (Poultry)
	Day-3: 09/01/2025 (Thursday)	
09:00-09:30 AM	Recall Session	Dr. B.S. Ghanghas Faculty, EEI, Nilokheri
09:30-11:30 AM	Ethics and morality for enhanced performance	Dr. Satyakaam Malik Faculty, EEI, Nilokheri
11:30-11:40 AM	**Tea Break**	
11:40-01:00 PM	Hands on experience of digital tools for transfer of technologies	Dr. P.K. Singh, Professor (Irrigation & Drainage Engineering)
01:00-02:00 PM	**Lunch Break**	
02:00-03:30 PM	Visit of horticulture research centre	Dr. A.K. Singh, Professor (Horticulture) & Jt. Director
03:30-05:00 PM	Visit of vegetable research centre	Dr. Lalit Bhatt, Assoc. Professor (Vegetable Science)
	Day-4: 10/01/2025 (Friday)	
09:00-10:00 AM	Interpersonal relationship skills	Dr. Satyakaam Malik Faculty, EEI, Nilokheri
10:00-11:00 AM	Tools for effective and efficient transfer of farm technologies	Dr. B.D. Singh, Professor Directorate of Extension Education
11:00-11:15 AM	**Tea Break**	
11:30-12:30 PM	Major schemes and extension activities runned by department of agriculture	Dr. Abhay Saxena Chief Agriculture Officer, U.S. Nagar
12:30-01:30 PM	Mushroom production for empowering rural youth	Dr. Nirmala Bhatt, Professor (Plant Pathology)
01:30-02:30 PM	**Lunch Break**	
02:30-03:00 PM	Post evaluation of training programme	Course coordinators
03:00-04:00 PM	Valedictory function & feedback	Chief guest, Course coordinator & participants

प्रशिक्षण में प्रतिभागियों की उपस्थिति का तुलनात्मक विवरण

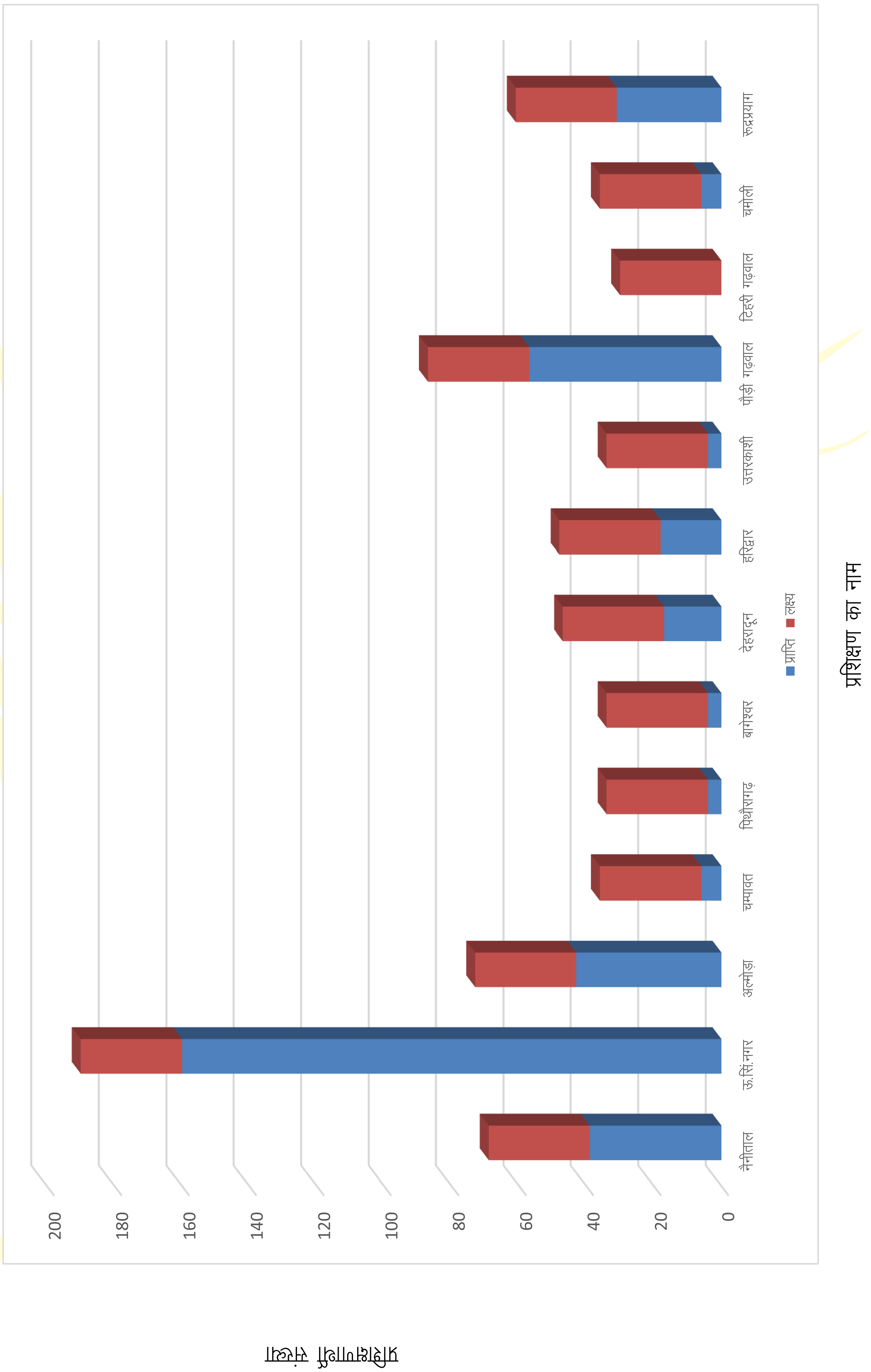

6. विभिन्न प्रशिक्षणों के दौरान कृषकों की प्रतिक्रिया/फीडबैक

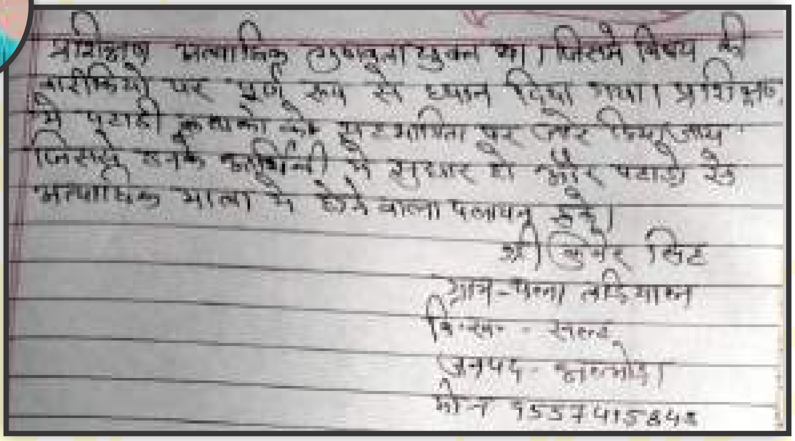

प्रशिक्षण अत्याधिक [illegible] था। जिसमें विषय की बारीकियों पर पूर्ण रूप से ध्यान दिया गया। प्रशिक्षण में पहाड़ी कृषकों की सहभागिता पर जोर दिया गया। जिससे उनकी कठिनाई में सुधार हो और पहाड़ से अत्याधिक मात्रा में होने वाला पलायन रुके।

श्री [illegible] सिंह
ग्राम- [illegible]
वि॰ख॰ - [illegible]
जनपद- अल्मोड़ा।
फोन 9557415848

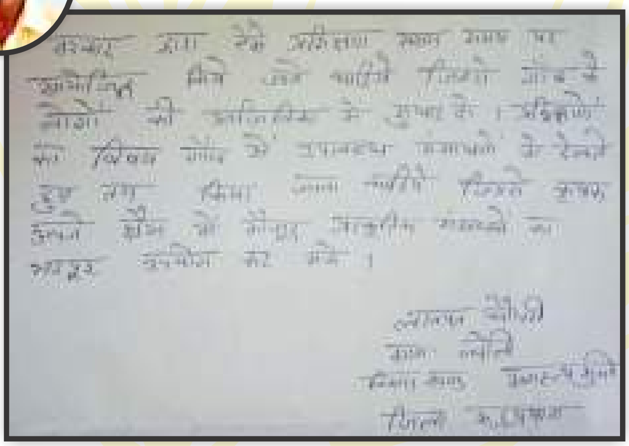

[illegible]

जिला – अल्मोड़ा

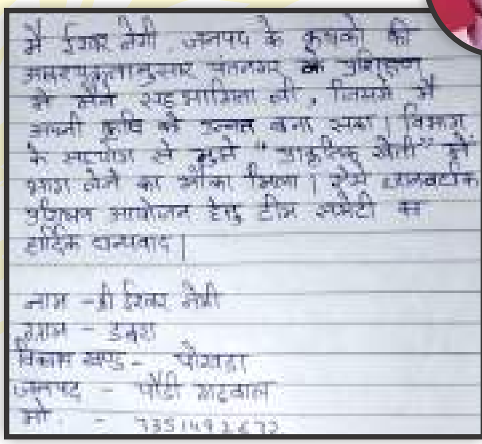

मैं ईश्वर नेगी जनपद के कृषकों की आवश्यकतानुसार समेटी के प्रशिक्षण में सहभागिता की, जिससे मैं अपनी कृषि को उन्नत बना सका। विभाग के सहयोग से मुझे "प्राकृतिक खेती" की प्रशिक्षण लेने का मौका मिला। ऐसे लाभकारी प्रशिक्षण आयोजन हेतु टीम समेटी का हार्दिक धन्यवाद।

नाम – श्री ईश्वर नेगी
ग्राम – डबरा
विकास खण्ड – पौखड़ा
जनपद – पौड़ी गढ़वाल
मो॰ – 7351492672

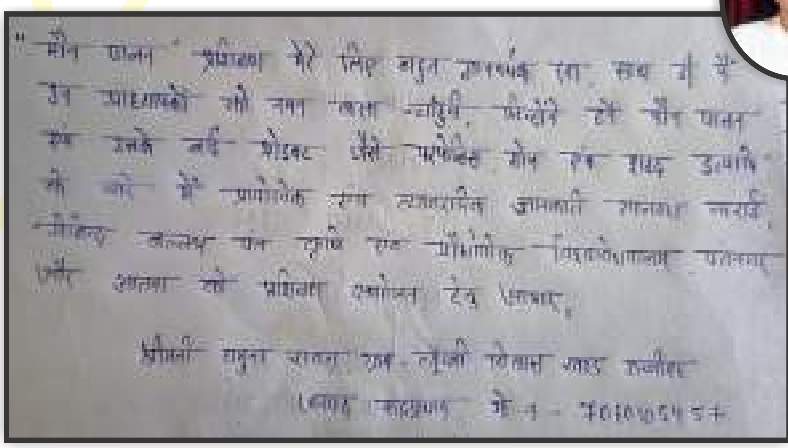

"मौन पालन" प्रशिक्षण मेरे लिए बहुत ज्ञानवर्धक रहा। [illegible]

[illegible] प्रशिक्षण आयोजन हेतु धन्यवाद,

श्रीमती [illegible]

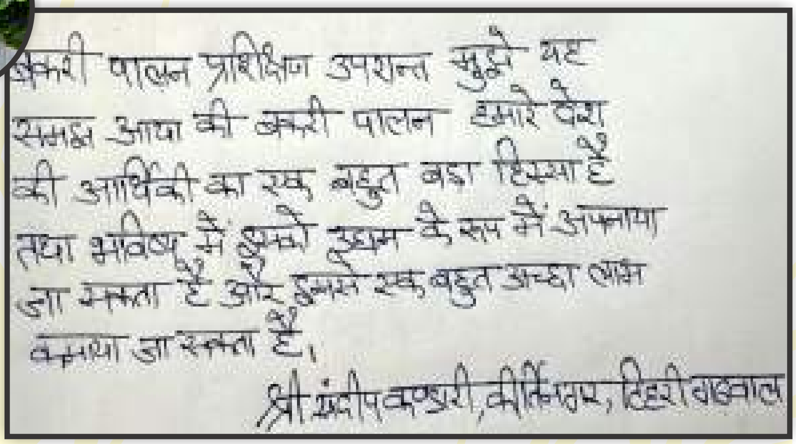

बकरी पालन प्रशिक्षण उपरान्त मुझे यह समझ आया की बकरी पालन हमारे देश की आर्थिकी का एक बहुत बड़ा हिस्सा है तथा भविष्य में इसको उद्यम के रूप में अपनाया जा सकता है और इससे एक बहुत अच्छा लाभ कमाया जा सकता है।

श्री संदीप कण्डारी, कीर्तिनगर, टिहरी गढ़वाल

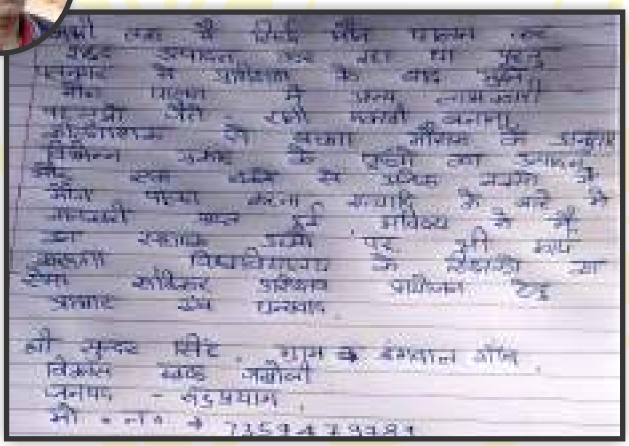

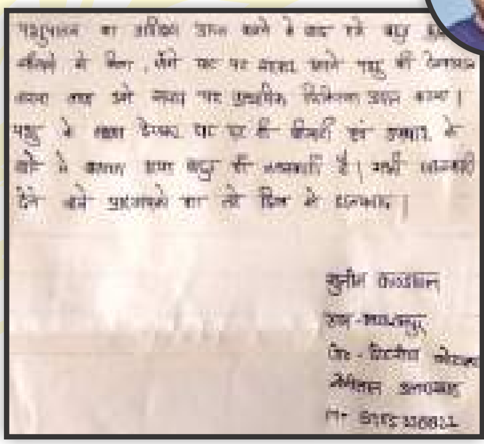

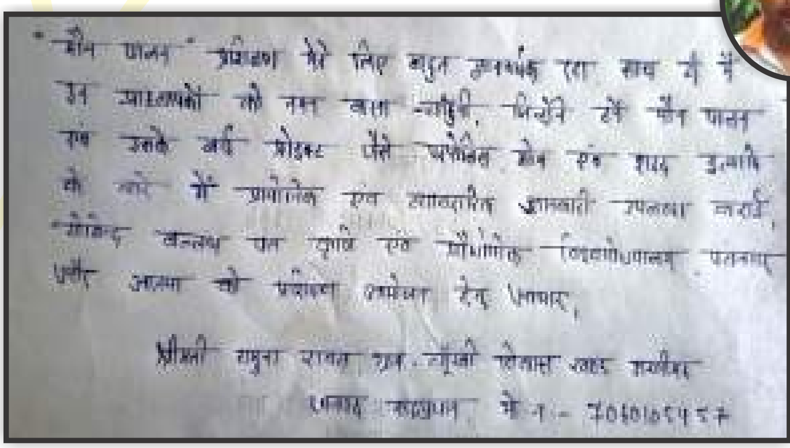

स. सफलता की कहानियाँ

7. कृषकों के आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाती समेटी–उत्तराखण्ड

7.1 खुशियों की राह दिखाती मशरूम एवं सब्जी उत्पादनः

कृषक का नाम : श्री अशोक कुमार
ग्राम–नाव, विकास खण्ड–कल्जीखाल, जनपद–पौड़ी गढ़वाल

परिचय– श्री अशोक कुमार 60 वर्षीय कृषक हैं जो शुरूआत से ही अपने पैतृक घर में खेती–बाड़ी का कार्य किया करते थे। पूर्व में आप सामाजिक कार्यकर्ता थे और साथ ही गांव में फोटोग्राफी का व्यवसाय करते थे, जो विपरीत पारिवारिक परिस्थितिवष छोड़ना पड़ा। वर्तमान में आपके क्षेत्र से अधिकांषतः लोग पलायन कर चुके हैं। गांव खाली और खेत बंजर हैं। ऐसी स्थिति में आपके पास भी षहरी क्षेत्र में जाकर कार्य तलाषने का विकल्प था किन्तु आपने परिस्थितियों से समझौता न करके गांव में रहकर ही कुछ करने का संकल्प लिया। आपने सर्वप्रथम 2009–10 गौ–पालन की एक छोटी सी इकाई से शुरूआत की और इस प्रकार गांव में ही आय सृजन की शुरूआत की। एक दुर्घटना में चोट लगने के बावजूद भी आप अटल संकल्प के साथ गांव में बने रहे और दुग्ध व्यवसाय के साथ–साथ बंजर खेतों को भी आबाद करने का बीड़ा उठाया। इसी दौरान क्षेत्र के कुछ अन्य प्रगतिशील कृषकों के सम्पर्क में आये और आपको समेटी–पंतनगर द्वारा आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों की जानकारी प्राप्त हुई, और आपने आतमा के सहयोग से मशरूम उत्पादन, डेयरी, संरक्षित कृषि जैसे प्रशिक्षणों में भाग लिया। वर्तमान में आप इन सब विधाओं का अपनी खेती में प्रयोग करते हुए आय में बढ़ोत्तरी कर रहे हैं।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों यथा् पशुपालन, मशरूम उत्पादन, मौन पालन, संरक्षित कृषि इत्यादि में भाग लेकर अपना क्षमता विकास किया। पंतनगर से मिले कृषि साहित्य पढ़कर इन्हें अपनी खेती में कार्यरूप में बदले।
2. प्रशिक्षणों के दौरान सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के कृषकों के बीच उनके द्वारा किये जा रहे कृषि कार्यों के बारे में पारस्परिक वार्ता एवं वीडियो के माध्यम से एक–दूसरे का कृषि कार्य देखकर बेहतर करने की प्रतिस्पर्धा।
3. समेटी, पंतनगर नामक व्हाट्सऐप ग्रुप में आपको जोड़ दिया गया, जिससे वैज्ञानिकों से सीधे जुड़ाव के साथ–साथ अन्य कृषकों से वार्ता कर अपने कृषि सम्बन्धी समस्या का समाधान करते हैं। इस ग्रुप के माध्यम से अन्य पशुपालन सम्बन्धी कृषकों द्वारा प्रभावी विपणन की राह भी दिखायी गयी।

4. घर रहते हुए प्रशिक्षणों के दौरान व्याख्यान देने वाले वैज्ञानिकों से दूरभाश के माध्यम से सम्पर्क कर अपनी समस्याओं का निदान प्राप्त करते हैं।
5. विश्वविद्यालय हेल्पलाईन संख्या 05944–234810 का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।

परिणाम एवं प्रभाव–

- वर्तमान में आप जलागम के सहयोग से खाली पड़े गांव के कमरों में मशरूम की छोटी–छोटी इकाईयों के द्वारा अलग–अलग किस्म की मशरूम उत्पादित कर रहें हैं। आपके पास एक पॉली हाउस भी है, जिसमें आप बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं।
- पूर्व में जहाँ आपको पारम्परिक खेती से रू. 10 हजार की वार्षिक आय होती थी, वहीं अब यह लगभग रू. 1.50 लाख होती है।
- पूर्व में षून्य आमदनी से शुरूआत कर आज आप जीविका चलाने लायक आमदनी गांव में ही रहकर अर्जित कर रहें हैं एवं अन्य किसानों को भी गांव में ही रहकर गांव के ही संसाधनों का उपयोग कर एक अच्छा जीवन व्यवतीत करने के लिए प्रेरित कर रहें हैं।
- कृषि से लाभ मिलने पर सब्जियों के उन्नत बीज व यंत्रों तथा बच्चों के शिक्षा पर ज्यादा निवेश कर रहे हैं।

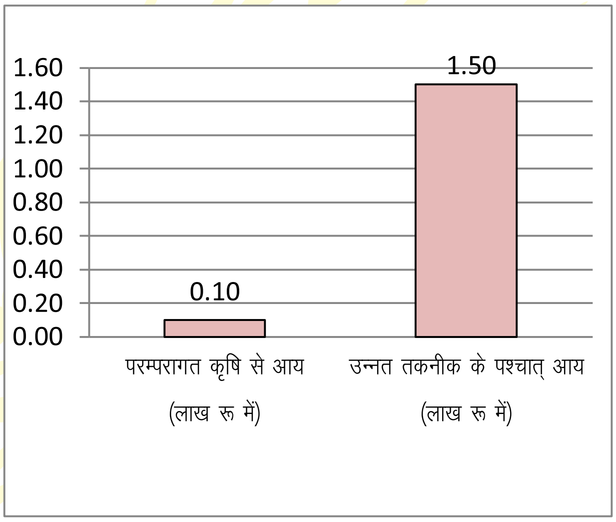

7.2 मौन पालन एवं मशरूम उत्पादन– सुखद भविष्य की राह :

कृषक का नाम : श्री हरीश सजवान
ग्राम–डोलमार, विकास खण्ड–भीमताल, जनपद–नैनीताल

परिचय– विख्यात पर्यटक स्थल, मनमोहक व नैसंर्गिक सुंदरता के लिए जाना जाने वाले नैनीताल निवासी श्री हरीश सजवान, उम्र 57 वर्ष पेषे से ऑटो इलैक्ट्रिक इंजीनियर हैं। वर्ष 2016 में नोटबंदी की मार पड़ने के कारण आपको अपने व्यवसाय में भारी आर्थिक क्षति हुई। परिणाम स्वरूप आपने दिल्ली से अपने पेतृक गाँव लौटकर उन्नत कृषि द्वारा स्वरोजगार चुनने का संकल्प लिया। आप प्रायः देखते थे कि ग्रामीण पर्यटकों को स्थानीय मूल्यवर्धित उत्पादों का विक्रय कर ठीक–ठाक आय अर्जित करते थे। इसी क्रम में आप भी चुनौतियों का सामना व समस्याओं से जूझते हुए अन्ततः मत्स्य पालन की एक छोटी सी इकाई से शुरूआत की। इसी के साथ आपने मौन पालन व अन्य स्थानीय उत्पादों के उत्पादन व विपणन की भी योजना बनायी। मत्स्य विभाग से मत्स्य पालन की जानकारी लेने के दौरान आपको समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों की जानकारी प्राप्त हुई तथा विभाग द्वारा अपना नामांकन कराया और आपने विभिन्न विषयों जैसे– मशरूम उत्पादन, मौन पालन, बकरी पालन एवं मत्स्य पालन विषयक प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने घर में छोटी–छोटी इकाईयों से कृषिकरण प्रारम्भ किया। समय के साथ विशेषज्ञता बढ़ने पर आप मौन पालन व मशरूम उत्पादन तक ही सीमित न रहते हुए अनेक प्रकार की हल्दी, काला आलू, काला गेहूँ, काला टमाटर, काला मक्का इत्यादि कई नये विषयों पर कार्य कर रहे हैं और आपका कहना है कि इन सब में समेटी, पंतनगर द्वारा प्राप्त प्रशिक्षणों का महती योगदान है।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. पंतनगर प्रवास के दौरान आप मत्स्य पालन, मशरूम उत्पादन, उद्यान एवं सब्जी अनुसंधान केन्द्रों का भ्रमण कर व्यावहारिक ज्ञान अर्जित किये, जिससे इन्हें सब्जी उत्पादन, मत्स्य पालन इत्यादि क्षेत्रों में कार्य प्रारम्भ करने की प्रेरणा मिली।
2. प्रशिक्षणों के दौरान सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के कृषकों के बीच उनके द्वारा किये जा रहे कृषि कार्यों के बारे में पारस्परिक वार्ता एवं वीडियो के माध्यम से एक–दूसरे का कृषि कार्य देखकर बेहतर करने की प्रतिस्पर्धा।
3. समेटी, पंतनगर नामक व्हाट्सऐप ग्रुप में आपको जोड़ दिया गया, जिससे वैज्ञानिकों से सीधे जुड़ाव के साथ–साथ अन्य कृषकों से वार्ता कर अपने कृषि सम्बन्धी समस्या का समाधान करते हैं।
4. विश्वविद्यालय हेल्पलाईन संख्या 05944–234810 का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।

परिणाम एवं प्रभाव–

- वर्तमान में मत्स्य पालन के अतिरिक्त आपने मशरूम उत्पादन और मौन पालन को बड़े उद्यम के रूप में अपनाते हुए

स्वरोजगार स्थापित किया है।

- आपका कहना है कि उन्नत कृषि ने ऑटो इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर को सफल कृषक के रूप में विशिष्ट स्थान दिलाया।
- राजभवन, नैनीताल में आयोजित हनी उत्सव, 2024 में आपको मौन पालन में अभिनव तकनीकें अपना कर आय में वृद्धि करने एवं अन्य कृषकों को प्रेरित करने के लिए 'कृषक सम्मान' से विभूषित किया गया।
- वर्ष 2024 में आपको उत्तराखण्ड दिवस के अवसर पर 'किसान सम्मान' एवं वर्ष 2025 में सरस मेले में आपको उद्यान विषय में 'किसान श्री' जैसे पुरस्कारों से विभूषित किया गया।
- श्री सजवान ने बताया कि दिल्ली से आने के पश्चात् प्रारम्भ में खेती से जहाँ मुश्किल से ₹ 50 हजार मिलते थे, उन्नत तकनीक और परिश्रम के बल पर आज लगभग ₹ 2.50 लाख की वार्षिक आय हो रही है।

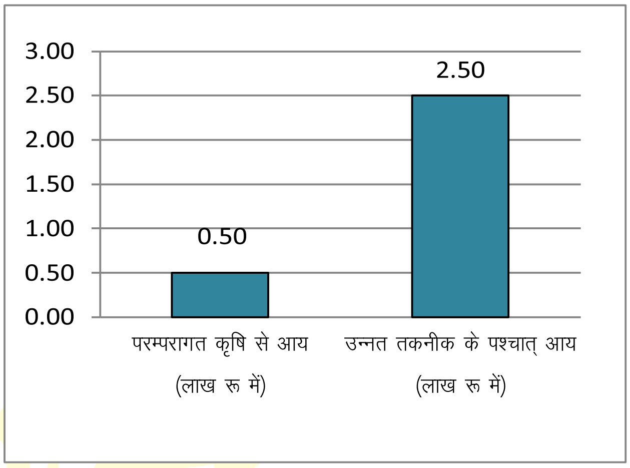

7.3 मशरूम उत्पादन से धन उत्पादन

कृषक का नाम : श्रीमती ममता मेहता

ग्राम–कपकोट, विकास खण्ड–कपकोट, जनपद–बागेश्वर

परिचय– कल–कल बहती सरयू नदी के किनारे स्थित जिला बागेष्वर मंदिरों, ग्लेषियर व इको टूरिज्म के लिए विख्यात है। श्रीमती ममता मेहता, उम्र 36 वर्ष इसी जिले की निवासी हैं। आपका जीवन बहुत अच्छे से व्यतीत हो रहा था, पर यकायक असमय आपके पति के निधन के पश्चात् आपका संघर्श प्रारम्भ हुआ। यद्यपि आपने हार न मानते हुए हर चुनौती का साहसपूर्वक सामना किया। वर्ष 2017 में उन्होंने कृषि के क्षेत्र में भाग्य आजमाने की ठानी, जिसकी शुरूआत उन्होंने कृषि विभाग से सम्पर्क कर की। इनकी दक्षता एवं लगन को देखते हुए विभाग ने उनके खेतों पर प्रदर्शन एवं अन्य प्रसार गतिविधियाँ शुरू की। तकनीकी जानकारी के अभाव में आपको शुरू में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अतः विभाग ने आपको समेटी पंतनगर में होने वाले ''मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण'' के लिए नामांकित किया। आपने महसूस किया कि मशरूम उत्पादन आपके लिये सर्वोत्तम उद्यम होगा। यह प्रशिक्षण आपके लिए ''आंख खोलने'' जैसा साबित हुआ। आपने विभागीय मदद से वर्ष 2019 में एक छोटे से कमरे में तीन बैग से मशरूम उत्पादन की शुरूआत की और वैज्ञानिक विधाओं का समावेष करते हुए मशरूम उत्पादन में कई गुना वृद्धि की।

वर्ष दर वर्ष आपने अपने उद्यमिता कौषल को बढ़ाया और जनपद स्तरीय ''मशरूम मास्टर ट्रेनर'' के रूप में प्रतिष्ठित हुई। इसके पश्चात् आप समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित अन्य प्रशिक्षणों में भी आवश्यकतानुसार भाग लिया। पंतनगर में प्रशिक्षणों के दौरान होने वाले व्याख्यानों एवं प्रायोगिक कक्षाओं का भरपूर लाभ लिया।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. मशरूम उत्पादन, मत्स्य पालन, संरक्षित खेती एवं बाजार आधारित प्रसार प्रशिक्षणों के बारे में तकनीकी जानकारी के साथ–साथ कृषक के आवश्यकतानुरूप अनेक जानकारी व कृषि साहित्य प्रदान की गई।
2. प्रशिक्षण अवधि में सब्जी अनुसंधान केन्द्र, जैविक कृषि इकाई, उद्यान अनुसंधान केन्द्र एवं मछली तालाब के भ्रमण के दौरान जैविक कृषि एवं जैविक सब्जी उत्पादन सम्बन्धी प्रायोगिक जानकारी दी गई।
3. समेटी, पंतनगर द्वारा आपको व्हाट्सऐप ग्रुप में जोड़ दिया गया, जिसके द्वारा तकनीकी जानकारी का आदान–प्रदान, विषय से सम्बन्धित लेख की उपलब्धता हासिल की।
4. विश्वविद्यालय हेल्पलाईन संख्या

05944–234810 का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।

परिणाम एवं प्रभाव–

- मात्र पांच बैग मशरूम उत्पादन से आपका व्यवसाय आज एक टन उत्पादन क्षमता तक पहुंच चुका है। आप क्षेत्र की अन्य युवाओं को भी इस उद्यम से जोड़ने हेतु प्रेरित करती रहती हैं।
- आपने महिला पुलिस कर्मियों को भी मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण प्रदान कर सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जिसके लिए आपको वरिश्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा सम्मानित किया गया।
- आप ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में भी कदम रख रहीं हैं जहाँ आप पर्यटकों के लिए ''होम स्टे'' का निर्माण की हैं। इस ''होम स्टे'' का उद्देश्य न केवल स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देना है बल्कि उत्तराखण्ड के युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ना है।
- आपको आतमा से ''किसान श्री'' एवं ''किसान भूषण'' सम्मान से सम्मानित किया गया। सामाजिक कार्यों में आपके योगदान के लिए नैनीताल जिले में आपको ''दानपुर रत्न'' सम्मान से भी सम्मानित किया गया। पंतनगर में आयोजित राष्ट्रीय कृषि उद्यमिता विकास मेला में आपको अग्रणी महिला उद्यमी सम्मान से नवाजा गया।
- वर्तमान में आपकी मशरूम, उद्यान, डेयरी इत्यादि से वार्षिक आय लगभग रू. 4.50 लाख है जबकि वर्ष 2019 में तीन बैग मशरूम द्वारा यह मात्र रू. 6,000 थी। आय बढ़ने के परिणाम स्वरूप आपने उन्नत कृषि निवेश, मशरूम क्षेत्रफल में विस्तार और बच्चों के सर्वोत्तम शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहीं हैं।

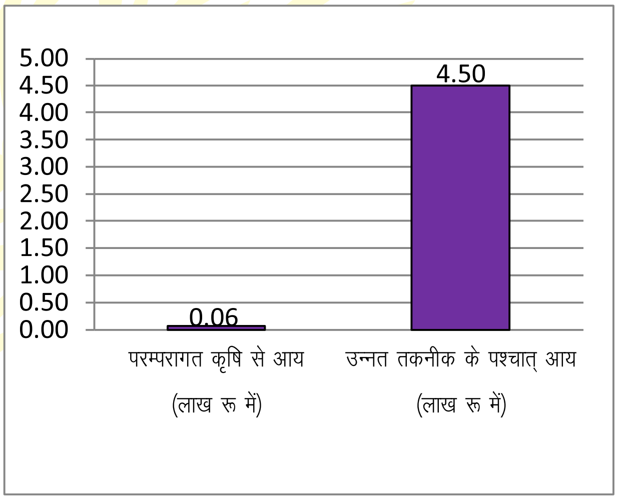

7.4 प्राकृतिक खेती से सशक्तिकरण :

कृषक का नाम : श्री रणजीत सिंह बंगारी रावत

ग्राम–बंगार, विकास खण्ड–जौनपुर, जनपद–टिहरी गढ़वाल

परिचय– आपने वर्ष 2009–2013 तक चिकित्सा के क्षेत्र में कार्य किया और इसी दौरान आपने स्नातक डिग्री प्राप्त कर अपनी शिक्षा भी पूर्ण की। आपने उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण कर निजी विद्यालय में अध्यापन का कार्य किया। वर्ष 2020–21 में आये कोविड महामारी की विभिशिका ने आपको यह सोचने पर विवश कर दिया कि इस तरह के निजी विद्यालय में पढ़ाने से अच्छा कोई ऐसा कार्य किया जाय जो आय अर्जन का माध्यम बनने के साथ–साथ लोक कल्याणकारी हो। तत्क्रम में आपने गहन विचार कर कृषि के क्षेत्र में ''प्राकृतिक खेती'' करने का निष्चय किया। विषय सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन, विभागों से सम्पर्क करते हुए आपने यह विधा अपनी खेती में प्रारम्भ की। प्राकृतिक खेती सम्बन्धी प्रशिक्षण पंतनगर से करने के पश्चात् आप इस विधा में और भी पारंगत हुए। वर्तमान में आप प्राकृतिक खेती, बागवानी एवं पशुपालन का कार्य करते हुए न सिर्फ आर्थिकी में बढ़ोत्तरी कर रहे हैं, बल्कि समाज को रसायन रहित खेती करने हेतु प्रेरित भी करते रहते हैं।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों यथा् प्राकृतिक खेती, जैविक खेती एवं पशुपालन इत्यादि में भाग लेने के साथ–साथ विभिन्न कृषि साहित्य प्रदान किया गया।

2. उत्तराखण्ड के कृषकों के बीच उनके द्वारा किये जा रहे कृषि कार्यों के बारे में पारस्परिक वार्ता एवं वीडियो के माध्यम से एक–दूसरे का कृषि कार्य देखकर बेहतर करने की प्रतिस्पर्धा।
3. समेटी, पंतनगर नामक व्हाट्सऐप ग्रुप में आपको जोड़ दिया गया, जिसके माध्यम से आप अपने कृषि सम्बन्धी समस्याओं का वैज्ञानिकों से सुझाव, आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों की जानकारी एवं अन्य कृषकों से वार्ता कर बेहतर बाजार की जानकारी लेते रहते हैं।
4. विश्वविद्यालय हेल्पलाईन संख्या 05944–234810 का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।
5. कृषक उत्साहवर्धन हेतु समय–समय पर विभिन्न कृषकों की सफलता की कहानियों का अलग–अलग पत्रिकाओं में प्रकाशन।

परिणाम एवं प्रभाव–

- प्रशिक्षण उपरान्त आपको प्राकृतिक खेती हेतु एक सही दिशा मिली। विश्वविद्यालय

में प्राकृतिक खेती के नमूने को देखते हुए आपने अपने निवास में भी उसी प्रकार का नमूना तैयार किया।

- प्राकृतिक खेती में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न तरह के प्राकृतिक अस्त्र जैसे नीमास्त्र, बह्मास्त्र, अग्निस्त्र, हर्बल कुनाप जल, दषपर्णी एवं पंचगव्य खुद तो बनाते ही है साथ ही साथ अन्य किसान साथियों को भी इसकी जानकारी देते हैं।
- यदि आपकी आमदनी की बात की जाय तो आप महीने में लगभग रू. 30 हजार अभी प्रारम्भिक अवस्था में कमा रहे हैं और आपका कहना है यदि इस क्षेत्र में सही वैज्ञानिक तकनीकियों का प्रयोग कर अत्यधिक मेहनत की जाये तो यह आय असीमित हो सकती है।

स्वामी विवेकानन्द जी की इन पंक्तियों ''चलो प्रकृति की ओर लौट चले'' द्वारा बेरोजगारों के लिए आप एक संदेश दे रहे हैं तथा आपका मानना है कि जिनके पास पर्याप्त संसाधन है वे लोग पशुपालन, प्राकृतिक खेती एवं बागवानी से अपने जीवन को सफल एवं आत्मनिर्भर बना सकते हैं।

7.5 वर्मी कम्पोस्टिंग से उद्यमिता की ओर बढ़ते कदम :

कृषक का नाम : श्री विशाल मंडल
ग्राम–दिनेशपुर, विकास खण्ड–गदरपुर, जनपद–ऊधम सिंह नगर

परिचय– श्री विशाल मंडल जनपद–ऊधम सिंह नगर के रहने वाले 28 वर्षीय प्रगतिशील कृषक हैं। बचपन से ही उनके अन्दर कुछ कर गुज़रने की चाह थी, जिस कारण बी.टेक की पढ़ाई पूरी कर उन्होंने एम.बी.ए. किया। आप बचपन से ही देखते थे कि किसान रासायनिक उर्वरक व कीटनाशी रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग करते थे। परिणाम स्वरूप मृदा का स्वास्थ्य, उत्पाद व पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था। आपका कृषि विशेषकर जैविक के क्षेत्र में काम करने की प्रबल इच्छा थी। आपका मानना है कि स्वस्थ जीवन का आधार कृषि है। इसी परिकल्पना को साकार करने के लिए केंचुआ खाद उद्यम प्रारम्भ

किया। विभिन्न विभागों से समन्वयन, प्रशिक्षण, तकनीकी जानकारी संकलित करते हुए वर्ष 2020 में षारदाकांत आर्गेनिक प्रोडक्ट्स की नींव रखी। समय–समय पर समेटी पंतनगर व अन्य विभागों के तकनीकी सहयोग से वर्ष दर वर्ष उत्पादन में वृद्धि करते गये। आपने कृषि के विभिन्न अन्य उद्यम जैसे पशुपालन, बकरी पालन, बागवानी, मुर्गी पालन, मशरूम उत्पादन के क्षेत्रों में भी कार्य करते हुए अपने प्रक्षेत्र को समन्वित कृषि प्रणाली का आदर्ष नमूना बनाया। अपने इस सफर को सीमित न रखकर समेटी–उत्तराखण्ड से जैविक खेती, खाद उत्पादन और कृषि तकनीकों पर कई महत्वपूर्ण प्रशिक्षण भी लिये। इन प्रशिक्षणों ने आपको प्राकृतिक खेती को वैज्ञानिक ढंग से अपनाने, वर्मी कम्पोस्ट और जैविक खाद के उत्पादन में गुणवत्ता सुधारने और उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में विशेष मदद की।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न

प्रशिक्षणों यथा् कुक्कुट पालन, मौन पालन, संरक्षित कृषि, जैविक खेती, मत्स्य पालन इत्यादि का साहित्य प्रदान किया गया।

2. सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के कृषकों के बीच उनके द्वारा किये जा रहे कृषि कार्यों के बारे में पारस्परिक वार्ता एवं वीडियो के माध्यम से एक–दूसरे का कृषि कार्य देखकर बेहतर करने की प्रतिस्पर्धा।
3. व्हाट्सऐप ग्रुप द्वारा तकनीकी जानकारी का आदान–प्रदान, विषय से सम्बन्धित लेख की उपलब्धता।
4. विश्वविद्यालय हेल्पलाईन संख्या 05944–234810 का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।

परिणाम एवं प्रभाव–

- आज आपकी यूनिट केवल उत्तराखण्ड में ही नहीं बल्कि देश के विभिन्न राज्यों में भी केचुंआ खाद का एक भरोसेमंद ब्रांड बन चुकी है। वर्तमान में आप 15 से ज्यादा लोगों को रोजगार देने के साथ–साथ हजारों किसानों के साथ सीधे जुड़े हैं।
- वर्तमान में आप अपने 500 वर्ग मीटर पॉलीहाउस में जरबेरा उगा कर पुश्प उत्पादन में भी हाथ आजमा रहे हैं एवं मत्स्य पालन के लिए तालाब की खुदाई का कार्य भी शुरू कर दिया है।
- वर्तमान में आपकी वार्षिक आय लगभग रू. 5.00 लाख है जबकि पूर्व में आमदनी नगण्य अथवा कह सकते हैं मुश्किल से रू. 20,000 होती थी।
- आपकी भविष्य की योजनाएं– जैविक उत्पादों को ऑनलाइन बेचने, केचुंआ खाद प्रशिक्षण की स्थापना, राज्य स्तरीय ब्राडिंग एवं प्रमाणीकरण तथा प्रदर्षनी और कृषि मेलों में भागीदारी हैं।
- युवा पीढ़ी के लिए आपका संदेश है कि ''दृढ़ इच्छा, शिक्षा, प्रशिक्षण, ये तीन चीजें मिल जायें तो कोई भी व्यक्ति सफल हो सकता है। आप यह भी कहना नहीं भूलते कि गांव की जमीन में सिर्फ फसल ही नहीं अपितु भविष्य भी उगता है''।

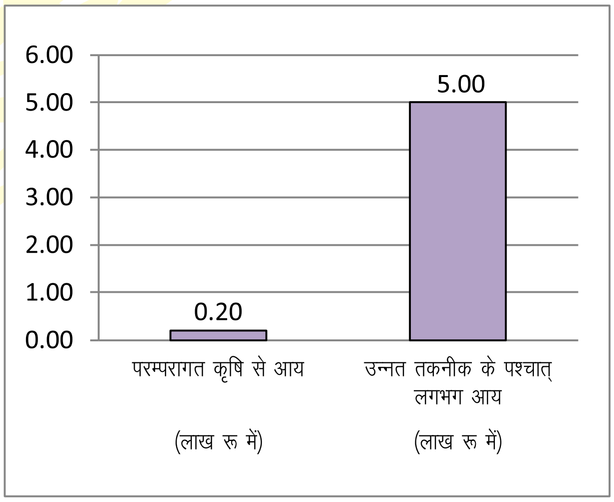

द. विविध

8. डिप्लोमा कोर्स–डेसी

(डिप्लोमा इन एग्रीकल्चरल एक्सटेंसन सर्विसेज फॉर इनपुट डीलर्स)

परिचय :

पूरे भारत में लगभग 2.82 लाख कृषि निवेश वितरक (इनपुट डीलर्स) हैं जो कृषकों को विभिन्न निवेश उपलब्ध कराने एवं उनके बीच नवीनतम कृषि तकनीक को लोकप्रिय बनाने के माध्यम होते हैं। कृषक समुदाय का प्रथम सम्पर्क केन्द्र कृषि निवेश वितरक ही होता है, जहाँ से वह विभिन्न निवेश क्रय के साथ ही उसकी प्रयोग विधि, कहाँ, कब, कैसे प्रयोग किया जाये आदि अनेक जिज्ञासाओं का समाधान जानने का प्रयास करता है। परन्तु निवेश वितरक अपने सीमित कृषि ज्ञान के कारण समुचित जानकारी नहीं दे पाता है, जिससे कृषक को कभी–कभी क्षति झेलनी पड़ जाती है। इस अतिमहत्वपूर्ण स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए मैनेज, हैदराबाद द्वारा यह परिकल्पना किया गया कि यदि इन कृषि निवेश वितरकों को कृषि की मूलभूत तकनीक उपलब्ध करा दिया जाये तो ये तकनीक को कृषक समुदाय के मध्य लोकप्रिय बनाने में जागरूक पुल की भाँति काम कर सकते हैं।

मैनेज, हैदराबाद ने वर्ष 2003 में एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स प्रारंभ किया जो डेसी (डिप्लोमा इन एग्रीकल्चरल एक्सटेंसन सर्विसेज फॉर इनपुट डीलर्स) के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में लगभग 63640 कृषि निवेश वितरक यह कोर्स पूरा कर कृषि तकनीक के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में लगभग 21280 वितरक यह कोर्स कर रहे है जो भविष्य में कृषकों के लिए पथ प्रदर्शक बनेगें।

उद्देश्य :

1. क्षेत्र विशेषानुसार कृषि निवेश वितरकों को फसल/सब्जी/फल उत्पादन तकनीक/प्रक्षेत्र भ्रमण करा कर कीट–रोग के लक्षण, पहचान एवं नियंत्रण आदि से रूबरू कराना।
2. कृषि निवेश के समुचित उपयोग के बारे में क्षमता विकास कराना।
3. विभिन्न कृषि निवेशों संबंधी एक्ट/कानून के बारे में जानकारी/जागरूक करना।
4. गाँव अथवा कृषक स्तर पर इन वितरकों को कृषि के बारे में इतना दक्ष कर देना कि ये पैरा एक्सटेंशन प्रोफेसनल के रूप में कृषकों के बीच कार्य कर सकें।

क्रियान्वयन :

डेसी कोर्स की महत्ता एवं इसके बढ़ते लोकप्रियता को देखते हुए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने यह निर्णय लिया है सभी राज्यों के कृषि निवेश वितरक यह कोर्स करें। पूर्व में इस कोर्स का शुल्क ₹ 20,000.00 था, जो वर्तमान में बढ़कर ₹ 28,000.00 हो गया है। सेन्ट्रल सेक्टर प्लान स्कीम के अन्तर्गत प्रशिक्षणार्थी को आधा यथा् ₹ 14,000.00/डीलर जबकि शेष आधा ₹14,000.00 मंत्रालय वहन करेगा। यद्यपि अनुदान का लाभ सिर्फ उन वितरको/डीलर को मिलेगा जिनके पास लाइसेंस होगा। स्व वित्त पोषित बैच के अन्तर्गत प्रशिक्षणार्थी को पूरा शुल्क ₹ 28,000.00 वहन करना होगा। कोर्स करने हेतु आवेदक को 10वीं पास होना चाहिए। प्रत्येक बैच में 40 डीलर पंजीकृत होते हैं। कोर्स में 40 दिन कक्षा एवं 08 दिन प्रायोगिक भ्रमण (कुल 48 दिन) कार्यक्रम निर्धारित रहता है। यह कोर्स संस्था एवं वितरकों के आपसी सहमति के आधार पर सप्ताह में किसी एक दिन जैसे रविवार अथवा बाजार बन्दी के दिन चलाया जाता है। कोर्स की क्रियान्वयन संस्था नोडल प्रशिक्षण संस्थान जैसे कृषि संस्थान, कालेज, कृषि विज्ञान केन्द्र, आतमा, स्वयं सेवी

संस्था हो सकती है, जिनका चयन राज्य स्तरीय गठित समिति द्वारा किया जाता है। इन संस्थाओं में कृषि के विशेषज्ञ होने चाहिए जो कृषि के विभिन्न विषयों पर डीलर्स को प्रशिक्षित कर सकें। ऐसे वितरक/डीलर जो यह कोर्स करना चाहते हों, वे कृषि विभाग, समेटी, मैनेज हैदराबाद इत्यादि से सम्पर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

कोर्स से आने वाला सम्भावित सकरात्मक बदलाव :

यह कार्यक्रम कृषि निवेश वितरक/डीलर हेतु एक वरदान की तरह है जो न सिर्फ उनके कृषि के कार्य कुषलता में वृद्धि करेगा बल्कि उनके स्वंय के खेती में लाभ प्रद होगा। देश में ज्यादातर डीलर जो कृषक समुदाय से होते हैं, अपने परिवार, गाँव व आस–पास के लोंगों को कृषि संबंधी समुचित जानकारी देकर पैदावार एवं आर्थिक बढ़ोत्तरी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगें। इस कार्यक्रम से डीलरों का रेखीय विभाग के अधिकारी एवं कृषि वैज्ञानिकों से सम्पर्क बढ़ेगा जो परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप में अनेक कृषि के विभिन्न तकनीकी ज्ञान, कृषि निवेश विक्रय संबंधी कानून/नियम आदि बढ़ाने में मददगार होगा। अन्ततः डीलर, विभागीय अधिकारी और वैज्ञानिकों का यह गठजोड़ कृषकों की समृद्धि बढ़ाने, आय दोगुनी करने एवं भविष्य उज्जवल करने में मददगार होगा।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा संचालित डिप्लोमा कोर्स–डेसी :

संस्थान द्वारा डेसी के पांच बैच क्रमशः प्रसार शिक्षा निदेशालय, पंतनगर द्वारा तीन एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर द्वारा दो बैच संचालित किये जा चुके हैं। पांचों बैच से कुल 181 बीज, कीटनाशी एवं उर्वरक विक्रेताओं को प्रशिक्षित किया गया है।

9. प्रकाशित लेख

9.1 खेती पत्रिका–कृषि निवेश वितरकों हेतु डिप्लोमा कोर्स 'डेसी'

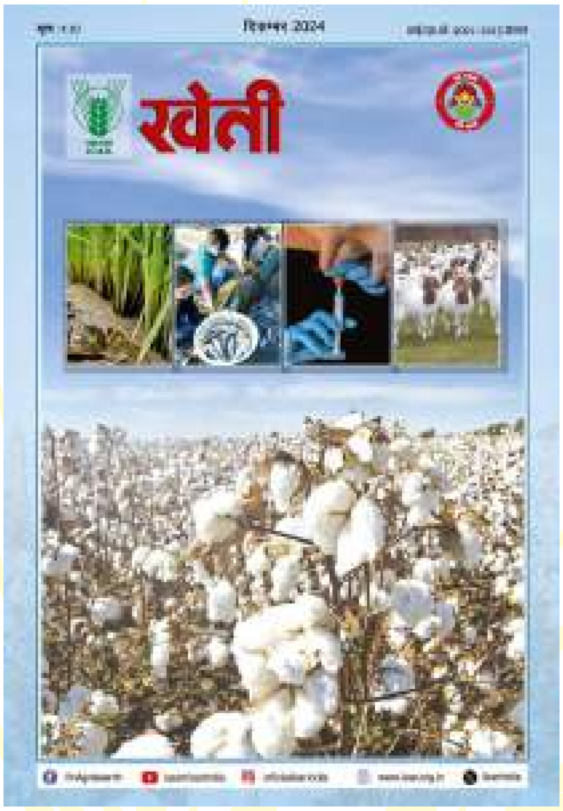

9.2 e-book jointly published by SAMETI-Uttarakhand and MANAGE, Hyderabad (ISBN No. 978-81-19663-77-4, available at www.manage.gov.in)

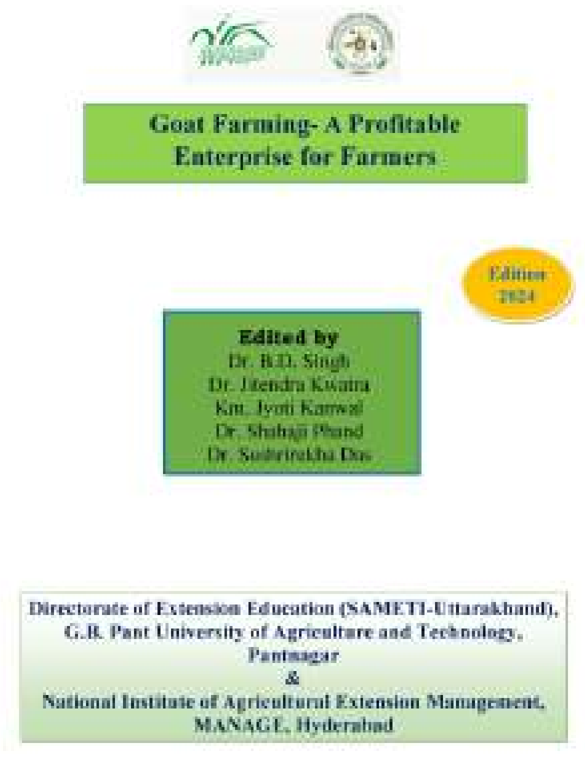

9.3 किसानों के लिए उपयोगी कृषि एडवायजरी

किसानों की आय वृद्धि में सहायक है कुक्कुट पालन

अमर उजाला 31.7.2024

पंतनगर। समेटी की ओर से आय बढ़ाने के लिए कुक्कुट पालन पर 24 से 27 जुलाई तक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। समेटी एवं प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. जितेंद्र क्वात्रा ने बताया कि कुक्कुट पालन ऐसा व्यवसाय है, जो किसानों को पर्याप्त आय वृद्धि में सहायक होगा।

प्राध्यापक सस्य विज्ञान एवं समेटी समन्वयक डॉ. बीडी सिंह ने समेटी के विभिन्न कार्यक्रम व प्रशिक्षणों की रूपरेखा बताई। पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के वैज्ञानिकों ने बैकयार्ड कुक्कुट पालन, गिनी मुर्गी पालन प्रबंधन, मुर्गियों का आवास प्रबंधन आदि की जानकारी दी। प्रशिक्षण में नैनीताल, ऊधमसिंह नगर, अल्मोड़ा और पौड़ी गढ़वाल के 31 विभागीय अधिकारियों व प्रगतिशील कृषकों ने भाग लिया। संवाद

10. कार्ययोजना–वर्ष 2025–26

अ. प्रस्तावित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र. सं.	विषय	दिनांक/अवधि	विभाग	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिभागी
			अप्रैल, 2025		
1.	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	अप्रैल 24–26, 2025 (तीन दिन)	कृषि विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 अधिकारी/प्रसार कार्यकर्ता/प्रगतिशील कृषक
			मई, 2025		
2.	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	मई 28–31, 2025 (चार दिन)	पशुपालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 कुक्कुट फार्म स्कूलों के संचालक, पशुधन प्रसार अधिकारी, बी.टी.एम., कुक्कुट पालक
			जून, 2025		
3.	जैविक खेती एवं जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	जून 25–28, 2025 (चार दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 विभागीय अधिकारी, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक आदि
			जुलाई, 2025		
4.	उन्नत बकरी पालन	जुलाई 23–25, 2025 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान/पशुपालन विभाग	40	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल एवं अल्मोड़ा से 5–5, चम्पावत, बागेश्वर, देहरादून, हरिद्वार, रूद्रप्रयाग से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक एवं विभागीय अधिकारी
			अगस्त, 2025		
5.	बाजार आधारित प्रसार	अगस्त 28–30, 2025 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक/उद्यान/कृषि/आतमा के अधिकारी
			सितम्बर, 2025		
6.	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	सितम्बर 23–25, 2025 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 कृषि विभाग/आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक
			अक्टूबर, 2025		
7.	प्रसंस्कृत दुग्ध उत्पादों से आर्थिक सशक्तिकरण	अक्टूबर 29–31, 2025 (तीन दिन)	पशुपालन/दुग्ध विकास विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील पशुपालक, आतमा/पशुपालन विभाग के अधिकारी
			नवम्बर, 2025		
8.	ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग	नवम्बर 19–22, 2025 (चार दिन)	कृषि/उद्यान/सहकारी विभाग	30	कृषि/उद्यान/सहकारी विभाग के अधिकारी/आतमा एवं प्रगतिशील कृषक
			दिसम्बर, 2025		
9.	मौन पालनः स्वरोजगार का सशक्त माध्यम	दिसम्बर 16–19, 2025 (चार दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 मधुमक्खी पालक/उद्यान/कृषि/आतमा के अधिकारी

क्र. सं.	विषय	दिनांक/अवधि	विभाग	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिभागी
			जनवरी, 2026		
10.	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	जनवरी 07–10, 2026 (चार दिन)	मत्स्य पालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील मत्स्य पालक/विभागीय अधिकारी
11.	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	जनवरी 19–22, 2026 (चार दिन)	पशुपालन/दुग्ध विकास विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील पशुपालक, आतमा/पशुपालन विभाग के अधिकारी
			फरवरी, 2026		
12.	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	फरवरी 04–07, 2026 (चार दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 मशरूम उत्पादक, उद्यान, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक आदि
			मार्च, 2026		
13.	पौधशाला प्रबन्धन	मार्च 02–04, 2026 (तीन दिन)	समस्त रेखीय विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 नर्सरी पालक एवं विभागीय अधिकारी

ब. सहायक निबन्धक, सहकारी समितियाँ कार्यालय, पिथौरागढ़ के वित्तीय सहयोग से प्राथमिक कृषि सहकारिता समिति के सदस्यों हेतु ऑनलाईन प्रशिक्षण

स. सहायक निबन्धक, सहकारी समितियाँ कार्यालय, अल्मोड़ा के वित्तीय सहयोग से प्राथमिक कृषि सहकारिता समिति के सदस्यों हेतु ऑनलाईन प्रशिक्षण

द. Collaborative Training Programme with EEI-Nilokheri: Year 2025-26

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की यात्रा

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की यात्रा

उत्तराखण्ड के मुख्य कृषि अधिकारी/परियोजना निदेशक 'आतमा' की सूची

क्र.सं.	राज्य/जनपद स्तर	नोडल ऑफिसर का नाम	पदनाम	दूरभाष संख्या	ई–मेल आई.डी.
1.	राज्य स्तर	श्री के0सी0 पाठक	निदेशक, कृषि उत्तराखण्ड	9412058641	dir.agri.uttarakhand@gmail.com dir-agri-ua@nic.in
2.	राज्य स्तर	डा0 दिनेश कुमार	संयुक्त निदेशक एवं राज्य समन्वयक 'आतमा'	9412413372	ukatma2010@gmail.com
3.	नैनीताल	श्रीमती ऋतु कुकरेती	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	9639243493	caonainital@yahoo.co.in
4.	ऊधम सिंह नगर	डा0 अभय सक्सेना	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	9412017464	caousnagar@gmail.com
5.	अल्मोड़ा	श्री विनोद कुमार शर्मा	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	9758078891	caoalmora@gmail.com
6.	पिथौरागढ़	श्री अमरेन्द्र कुमार चौधरी	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	8171128778	caopithoragarh@yahoo.in
7.	चम्पावत	श्री धनपत कुमार	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	8171419609	caochampawat@yahoo.co.in, caochp-agri-uk@gov.in
8.	देहरादून	श्री देवेन्द्र सिंह	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	9456601211	cao.deh.uk@gmail.com
9.	हरिद्वार	श्री गोपाल सिंह भण्डारी	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	9412922856	atmaharidwar2018@gmail.com
10.	चमोली	श्री जय प्रकाश तिवारी	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	7895595312	caocmi@gmail.com
11.	रूद्रप्रयाग	श्री लोकेन्द्र बिष्ट	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	9675477120	caorpg@gmail.com
12.	बागेश्वर	श्री राजेन्द्र उप्रेती	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	8755330909	caobageshwar@yahoo.in
13.	पौड़ी गढ़वाल	डा0 विकेश कुमार सिंह यादव	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	8433033995	cao.pauri00@gmail.com
14.	टिहरी गढ़वाल	डा0 विजय देवराड़ी	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	9412120961	caotehri@gmail.com
15.	उत्तरकाशी	श्री सचिन कुमार	मुख्य कृषि अधिकारी/ परियोजना निदेशक 'आतमा'	7834808800	caouki.agri2011@gmail.com

उत्तराखण्ड के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों की सूची

क्र. सं.	जनपद का नाम	केन्द्र का नाम एवं पता	प्रभारी अधिकारी का नाम	सम्पर्क सूत्र कार्यालय	सम्पर्क सूत्र मोबाइल नं0	ई–मेल
1.	चमोली	कृ.वि.के., ग्वालदम, जनपद–चमोली–246441	डा. एस.एस. सिंह, प्रभारी अधिकारी	01363-274287	9761969696 8475001596	kvkchamoli@rediffmail.com
2.	अल्मोड़ा	कृ.वि.के., मटेला (कोसी), जनपद–अल्मोड़ा–263643	डा. आर.के. शर्मा, प्रभारी अधिकारी	05962-241248	9412995904 8475001596	kvkalmora@gmail.com
3.	देहरादून	कृ.वि.के., ढकरानी, पो.–हर्बटपुर, जनपद–देहरादून–248001	डा. ए.के. शर्मा, प्रभारी अधिकारी	01360-224378	8475002277	kvkdehradun@gmail.com
4.	हरिद्वार	कृ.वि.के., धनौरी, जनपद–हरिद्वार–247667	डा. पुरूषोत्तम कुमार, प्रभारी अधिकारी	--	9411177299 8475002233	kvkharidwar@gmail.com
5.	नैनीताल	कृ.वि.के., ज्योलीकोट, जनपद–नैनीताल–263135	डा. सी. तिवारी, प्रभारी अधिकारी	05942-224547	7500241505 9412966838	kvknainital@rediffmail.com, vijaydoharey@gmail.com
6.	पिथौरागढ़	कृ.वि.के., गैंना–एंचोली, जनपद–पिथौरागढ़–262530	डा. जी.एस. बिष्ट, प्रभारी अधिकारी	--	9412344527	kvkpithoragarh@yahoo.com
7.	चम्पावत	कृ.वि.के., लोहाघाट, पो. –गलचौरा, जनपद–चम्पावत–262524	डा. दीपाली टी. पाण्डे, प्रभारी अधिकारी	--	8958737598	officerinchargekvklohaghat@gmail.com
8.	रूद्रप्रयाग	कृ.वि.के., जाखधार, वाया गुप्तकाशी, जनपद–रूद्रप्रयाग–246439	डा. संजय सचान, प्रभारी अधिकारी	--	9450410994	kvkjakh@rediffmail.com
9.	ऊधमसिंहनगर	गन्ना शोध एवं कृ.वि.के., बाजपुर रोड, काशीपुर, जनपद–ऊधमसिंहनगर–244713	डा. जितेन्द्र क्वात्रा, प्रभारी अधिकारी	--	7500241509	kvkkashipur@gmail.com
10.	बागेश्वर	कृ.वि.के., सिंदूरी बसखोला, काफलीगैर, जनपद–बागेश्वर–263628	डा. राजकुमार, प्रभारी अधिकारी	05963-255150	9558277433 6352035704	kvk.bageshwar@icar.gov.in
11.	उत्तरकाशी	कृ.वि.के., चिन्यालीसौड़, जनपद–उत्तरकाशी–249196	डा. के.के. पाण्डे, प्रभारी अधिकारी	01371-237198	9412950911	kvk.uttarkashi@icar.gov.in
12.	पौड़ी गढ़वाल	वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली औद्यानिकी एवं वानिकी कृषि विष्वविद्यालय, कृ.वि.के., भरसार, वाया चिपलघाट, जनपद–पौड़ी गढ़वाल–246123	डा. रश्मि लिंबू, प्रभारी अधिकारी	01348-226076	9756388201	kvkpaurigarhwal@gmail.com
13.	टिहरी गढ़वाल	कृ.वि.के., रानीचौरी, वाया चम्बा, जनपद–टिहरी गढ़वाल–249199	श्री आलोक जी. येवले, प्रभारी अधिकारी	01376-252101	7302230101	kvktehrigarhwal@gmail.com

कृषि सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र, पंतनगर–हेल्पलाइन : 05944–234810 एवं 235580
एवं किसान कॉल सेन्टर: 1800–180–1551

ISBN : 978-93-91664-21-3